चैत्र - बैसाख - ज्येष्ठ - आषाढ़ - श्रावण - भाद्रपद - अश्विन - कार्तिक - मार्गशीर्ष - पौष - माघ - फाल्गुन

Pre paid upto HP/48/SML (upto 31-12-2026) RNI NO. HPHIN/2001/04280

पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार www.matrivandana.org

मातृवन्दना

पौष-माघ, युगाब्द 5126, जनवरी 2025

सावधान! बांग्लादेश का हिन्दू अकेला नहीं

अबुआ देशम् अबुआ राज
अपना देश अपना राज
धरती आबा बिरसा मुंडा

भगवान बिरसा मुंडा ने शोषक ब्रिटिश औपनिवेशिक व्यवस्था के खिलाफ विद्रोह किया और इस आंदोलन को नाम दिया उन अलगुलान। जिसका अर्थ है - जल, जंगल, जमीन पर दावेदारी।

◆◆◆

भगवान बिरसा ने इस दौरान नारा दिया अबुआ देशुम अबुआ राज। हमारा देश हमारा राज। हजारों आदिवासियों ने इस आंदोलन में हथियार भी उठा लिए। अंग्रेजों ने इस विद्रोह को दबा दिया लेकिन आदिवासी समाज में इससे काफी जागरूकता आई और बिरसा मुंडा के आंदोलन को व्यापक जन समर्थन मिला।

◆◆◆

बिरसा मुंडा ने मुंडा आदिवासियों को जल, जंगल और जमीन की रक्षा के लिए बलिदान करने के लिए प्रेरित किया और यह आंदोलन 1895 से लेकर 1900 तक निरंतर चला रहा।

◆◆◆

बिरसा मुंडा ने युवा वर्ग को नशाखोरी से दूर रहकर आदिवासी लोगों के सेवा कार्य को प्राथमिकता देने तथा राष्ट्र सेवा में अपना योगदान देने के लिए प्रेरणा प्रदान की।

◆◆◆

भगवान बिरसा मुंडा ने अंधाधुंध किये जा रहे औद्योगिकीकरण और शहरीकरण का विरोध किया ताकि पर्यावरण संतुलन बना रहे।

◆◆◆

वायु एवं जल का प्रदूषण न हो इसके लिए उन्होंने अपने अनुयायियों को पौधारोपण करने तथा वनों को बचाने के लिए भी मार्गदर्शन दिया।

◆◆◆

वायु प्रदूषण को समाप्त करने के लिए फसलों के अवशेष को जलाए जाने का विरोध किया तथा सौर ऊर्जा की ओर ध्यान आकृष्ट किया।

◆◆◆

बिरसा मुंडा ने अपनी नेतृत्व क्षमता से तामार, संथाल, खासी आदिवासी समुदायों को संगठित करके अंग्रेजों का विरोध किया।

◆◆◆

पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार

Pre paid upto HP/48/SML (upto 31-12-2026) RNI NO. HPHIN/2001/04280

मातृवन्दना

वर्ष: 33 अंक : 01 हिन्दी मासिक, शिमला (हिमाचल प्रदेश), पौष-माघ, कलियुगाब्द 5126, जनवरी 2025

परामर्श
डॉ. किस्मत कुमार
श्री चन्द्र प्रकाश
श्री प्रताप समयाल
श्री मोतीलाल

सम्पादक
डॉ. दयानन्द शर्मा
98050 36545

सह सम्पादक
डॉ. कर्म सिंह

सम्पादक मण्डल
मीनाक्षी सूद, डॉ. उमेश मौदगिल,
डॉ. जय कर्ण, डॉ. सपना चंदेल

आवरण व अक्षर संयोजन
राजेश शर्मा

वितरण प्रमुख
नरेन्द्र कुमार

प्रकाशक / मुद्रक
कमल सिंह सेन

कार्यालय
मातृवन्दना, डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस
शिमला, हि.प्र. 171 004
दूरभाष : 0177 - 2836990
व्हाट्स ऐप : 76500 00990
ई-मेल : matrivandanashimla@gmail.com

मासिक शुल्क	₹25
वार्षिक शुल्क	₹150
आजीवन शुल्क	₹1500

वैधानिक सूचना :
पत्रिका का सम्पादकीय कार्य पूर्णत: अवैतनिक है। पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरूरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

इस अंक में...

संपादकीय	हिंदुओं के उत्पीड़न पर बांग्लादेश...	5
चिन्तन	भारत की पंथ निरपेक्षता और इस्लामिक	6
प्रेरक प्रसंग	मृत्यु से साक्षात्कार	7
आवरण	बांग्लादेश के हिन्दुओं की रक्षा..	8
महिला जगत्	महिला सशक्तिकरण की चुनौतियां...	12
संगठनम्	सेवा भारती की प्राकृतिक आपदा में...	13
देवभूमि	26 जनवरी को कर्त्तव्य पथ पर...	15
त्यौहार-मेले	कांगड़ा जनपद में पारंपरिक त्यौहार...	17
धर्म जागरण	प्रयाग का महाकुंभ...	19
विविध	राष्ट्र के विकास में सनातन संस्कृति...	20
कुटुम्ब प्रबोधन	संयुक्त परिवार की आदर्श भारतीय परंपरा...	21
नवाचार	हिमाचल की बेटी देवांशी का कमाल...	22
देश प्रदेश	विश्व शतरंज के बादशाह...	23
पुण्य स्मरण	समाज ने खोया महान प्रेरणास्रोत...	24
युवा पथ	हिमाचल का बेटा आर्यन...	26
घूमती कलम	कनाडा एवं अमेरिका से भारत...	27
समसामयिकी	एक देश एक चुनाव...	28
कृषि	नए साल में किसानों को बड़ी सौगात	31
काव्य जगत्	शुभ परिवर्तन	32
स्वास्थ्य	सर्दियों में गोंद का सेवन लाभकारी...	33
विश्व दर्शन	अमेरिका में हर पांचवा व्यक्ति...	34
बाल जगत्	साहिबजादों का बलिदान...	35

अमृत वचन

चरित्रवान व्यक्तियों के अभाव में महान से महान व
धनवान से धनवान राष्ट्र भी समाप्त हो जाते हैं।
-----स्वामी श्रद्धानंद जी

पाठकीय...

सम्पादक महोदय ! हरि-स्मरण !

मातृवन्दना का नवम्बर 2024 अंक आद्योपान्त पढ़ा, जिसमें बाहरी पृष्ठ पर स्वतन्त्रता संग्राम के महानायक वजीर रामसिंह पठानिया स्वर्णिम घुड़सवार वेश में तलवार उठाए नजर आ रहे हैं। सम्पादकीय में भी इस जांबाज के शौर्य और पराक्रम का विस्तार से वर्णन किया गया है जिसने ब्रिटिश सेना के नाक में दम कर रखा था। उसे एक षड्यंत्र से पकड़ कर रंगून जेल भेज दिया गया, जहाँ उन्हें कड़ी यातनाएं दी गई। फलत: वहीं पर 11 नवम्बर, 1856 को मात्र बत्तीस वर्ष की उम्र में शहीद हो गए। उनकी यह शहादत अविस्मरणीय रहेगी। डॉ. कर्मसिंह जी ने भी अति सुन्दर शब्दों में विस्तार से इसी विषय पर चर्चा की है जो अति प्रशंसनीय है। राष्ट्र सदा-सदा के लिए महानायक वजीर रामसिंह पठानिया का ऋणी रहेगा। महिला-जगत के अन्तर्गत डॉ. सपना चंदेल द्वारा 'मातृ-देवो भव' लेख में मदर्स- डे को पाश्चात्य संस्कृति का हिस्सा बताया है, जिसका हिन्दू-संस्कृति में कोई स्थान एवं महत्व नहीं है। लेखिका निस्सन्देह बधाई की पात्र हैं। संगठनम् के अन्तर्गत 2 अक्तूबर 2024 को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी द्वारा दिए गए उद्बोधन के महत्वपूर्ण बिंदु पठनीय एवं प्रेरणात्मक हैं। देवभूमि के अन्तर्गत कोर्ट निर्णय के बाद मस्जिद की तीन मंजिलों को गिराने का काम शुरू, सरकारी जमीन पर बनाया गया ढांचा ही गैर कानूनी है, फलत: यहाँ मस्जिद निर्माण की अनुमति का कोई औचित्य ही नहीं है। प्रयागराज के एक मदरसा में जाली नोटों का छापाखाना व आपत्तिजनक साहित्य मिलना भी चिन्ता का विषय है। रवीश मृगेन्द्र द्वारा सनातन धर्म और गाय का सम्बन्ध अति सुन्दर व पठनीय है। खेद का विषय है कि लोगों में श्वान संस्कृति की मानसिकता दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। फलत: आवारा कुत्तों के डर से मासूम बच्चों और महिलाओं का बाहर निकलना दुश्वार हो गया है। आवारा गोवंश सड़कों पर उत्पात मचा रहे हैं। विश्व-दर्शन के अन्तर्गत 'गाय के गोबर से जापान में चला जहाज़' हमें आश्चर्यचकित कर देता है। गौ-माता पुकारने वाले देश में गोवंश की दुर्दशा और विदेशों में गाय के गोबर की ऊर्जा पर निरन्तर शोध हमें शर्मसार करते हैं। पत्रिका अनेक संवेदनशील मुद्दों को लेकर अग्रसर है, जिसमें मानव जीवन का कोई पक्ष अछूता नहीं है जिसके लिए पत्रिका के संपादक एवं सहयोगी बधाई के पात्र हैं। मैं सबकी दीर्घायु व मंगलमय भविष्य की कामना करता हूँ। शेष प्रभु इच्छा पर। ईश्वर सब को सद्बुद्धि दें। वन्दे मातरम्।

लालचन्द ठाकुर, गांव व डाक हरसौर,
तह. बड़सर जिला हमीरपुर (हि.पु.)

महोदय,

जम्मू कश्मीर में अनुच्छेद 370 की वापसी संभव नहीं है, यह संपादकीय सत्यता को सामने लाने वाला है। इसी विषय पर आवरण कथा में 'धारा 370 कश्मीर में इतिहास ही रहेगा' आलेख भारतीय राजनीति के ध्रुवीकरण और निजी स्वार्थ के लिए धारा 370 को पुन: ले जाने की राजनैतिक मजबूरी तथा संतुष्टीकरण की पोल खोलता है तथा दूसरी ओर भारतीय राष्ट्रवाद की ओर संकेत करता है। नरेंद्र मोदी का नारा 'एक रहेंगे तो सेफ रहेंगे' और योगी आदित्यनाथ का नारा 'बंटेंगे तो कटेंगे' हिंदू जागरण के लिए एक ऐसा ध्येय वाक्य बन गया है जो सुप्तप्राय हिंदू जाति को एक उद्बोधन एवं मार्गदर्शन और प्रेरणा प्रदान करता है। सामाजिक विषयों पर अन्य आलेख भी हमेशा की तरह ज्ञान और प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं। अत: यह अंक भी पहले की तरह सभी जनों के लिए उपयोगी सामग्री से भरपूर है। यही वजह है कि आधुनिक पत्रिकाओं में मातृ वंदना का स्थान प्रमुख है। क्योंकि यह पत्रिका सभी आवश्यक और उपयोगी विषयों पर ज्ञानवर्धक सामग्री प्रस्तुत करती है जबकि अधिकांश पत्रिकाओं को परिवार में प्राप्त करना और सबके साथ सांझा करना पढ़ना कठिन होता जा रहा है। राष्ट्रवाद का भी प्रामाणिक विवरण इस पत्रिका के माध्यम से उपलब्ध हो पाता है। वर्तमान में राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक आधार पर कौन सी विचारधारा देश का संरक्षण करने की दिशा में अग्रसर है और कौन सी विचारधारा देश में अलगाववाद आतंकवाद को संरक्षण प्रदान कर रही है, यह स्वत: ही स्पष्ट हो जाता है। इस दृष्टि से मातृवंदना काफी उपयोगी सिद्ध हो रही है और पाठकों के माध्यम से समाज तक अपना चिंतन पहुंचाने में भी कामयाब है।

नेहा कुमारी सिढकुंड, चंबा

शिकायत व सुझाव के लिए सम्पर्क करें अथवा लिखें

0177-2836990 **7650000990**

ई-मेल: matrivandanashimla@gmail.com

सभी सुधी पाठकों व विज्ञापनदाताओं को मकर संक्रांति पर्व की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

स्मरणीय दिवस जनवरी 2025

गुरु गोविंद सिंह जयंती	05 जनवरी
रामलला प्राण प्रतिष्ठा	11 जनवरी
स्वामी विवेकानन्द जयंती	12 जनवरी
मकर संक्रान्ति	13 जनवरी
प्रयागराज महाकुंभ	13 जनवरी
संकष्टी चतुर्थी	14 जनवरी
गणतंत्र दिवस	26 जनवरी
मौनी अमावस्या	29 जनवरी

डॉ. दयानंद शर्मा
सम्पादक, मातृवन्दना

संपादकीय

हिंदुओं के उत्पीड़न पर बांग्लादेश के प्रति उमड़ता आक्रोश

प्रत्येक धर्म का नैतिक आधार सुनिश्चित है, जिसमें मानवता सर्वोपरि है। हर धर्म मानवता का संदेश देता है। विश्व में वर्तमान में सबसे प्राचीन सनातन हिंदू धर्म में मानव कल्याण को ही अधिमान दिया गया है। इस धर्म के मूल ग्रंथ वेदों में प्रकृति के कारक तत्वों को देव स्वरूप मानकर मानव कल्याण हेतु उनका स्तवन किया गया है। उत्तरकाल में उपनिषद ग्रन्थों के माध्यम से प्रत्येक प्राणी में एक समान जीवात्मा स्वीकार कर परमात्मा से उसे जोड़ने का प्रयास किया गया है। पुराण, रामायण, श्रीमद्भगवत गीता जैसे सद्ग्रंथ मनुष्य को सदाचरण और सद्कर्म की ओर प्रेरित करते हैं। 'वसुधैव कुटुंबकम्' और 'सर्वे भवंतु सुखिन:' का उद्घोष इस सनातन धर्म से ही उपजा है। स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि हिंदू धर्म का असली संदेश पूरी मानव जाति को एक सूत्र में पिरोना है। मदन मोहन मालवीय जी ने हिंदुत्व की व्याख्या सार्वभौम भ्रातृत्व, धार्मिक सहिष्णुता, समस्त प्राणियों के कल्याण की कामना से जोड़कर की है। गांधी जी का कथन था कि अहिंसात्मक साधनों द्वारा सत्य की खोज करने वाला सच्चा हिंदू है। हिंदू धर्म में हर धर्म का सार है। मानव कल्याण आधारित संस्कारों के कारण तथा सहिष्णुता-अहिंसा जैसी प्रवृत्ति के कारण हिंदुओं ने कभी उग्र होकर किसी दूसरे धर्म की आलोचना नहीं की और न ही उनके समुदाय का उत्पीड़न किया। अहिंसक रहते हुए हिंदुओं ने विश्व भ्रमण कर केवल अपने श्रेष्ठ विचारों और सदाचारों का ही प्रचार-प्रसार किया है, जबकि इस्लाम और ईसाई जैसे धर्मों ने विश्व में अपने धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए हिंसा और अनैतिकता के मार्ग का अनुसरण किया है। इतिहास गवाह है कि इस्लाम ने किस प्रकार छोटे-बड़े देशों को हिंसा के बल पर अतिक्रमित कर अपना जाल बिछाया है। ईसाई धर्म के अनुयायियों द्वारा किस प्रकार असंख्य यहुदियों को मृत्यु के घाट उतार दिया गया था।

अनैतिकता की और बढ़ते उनके कदम आज भी नहीं रूक रहे। धर्मान्ध एवं कट्टरवादी ताकतें हिंसा का मार्ग अपनाकर आज भी हिंदुओं की आस्था पर कुठाराघात किए जा रहीं है। बांग्लादेश में हिंदुओं का लगातार जिस प्रकार उत्पीड़न हो रहा है, उनकी ऐसी दयनीय स्थिति पर संपूर्ण विश्व का हिंदू समाज आक्रोशित है। विशेष रूप से भारत के हिंदुओं ने अपना रोष प्रकट करते हुए देश के विभिन्न स्थानों पर रैलियां निकालकर प्रदर्शन किए हैं। हिंदुओं में इस बात की भी नाराजगी है कि मानव अधिकार के नाम पर विश्व के नेता, संगठन और सामाजिक कार्यकर्ता मानव अधिकार दिवस पर एक मंच पर आकर समानता, स्वतंत्रता, सुरक्षा और न्याय की खूब हामी भरते हैं। उन द्वारा दुनिया में दबे कुचले तथा उत्पीड़ित लोगों की आवाज उठाई जाती है, किंतु बांग्लादेश में हिंदुओं के दर्द को अनदेखा किया जाता है। बांग्लादेश की यह स्थिति है कि आज वहां हिंदुओं का धर्म, जान और इज्जत तीनों खतरे में है। भारत का हिंदू सचेत हो चुका है। हिंदू आज सड़कों पर उतरा आए हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने भारत सरकार से आग्रह किया है कि वहां हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार रोकने के लिए वह विशेष प्रयास करें। संघ सहित अन्य हिंदू संगठन, स्वायत संस्थाएं तथा अन्य सामाजिक संगठन एकजुट होकर बांग्लादेश के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही करने के हक में प्रदर्शन कर रहे हैं। दिल्ली, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड छत्तीसगढ़, चंडीगढ़, उड़ीसा, राजस्थान तथा अन्य कई राज्यों के विभिन्न स्थानों पर प्रदर्शन किए जा रहे हैं। हिमाचल की राजधानी शिमला में भी हिंदू एवं सामाजिक संगठनों तथा कई संस्थाओं ने मिलकर बहुत बड़े प्रदर्शन का आयोजन किया। इसके अलावा प्रदेश के विभिन्न मुख्य स्थानों सोलन, हमीरपुर, चंबा, कुल्लू, रोहड़ू, मंडी, रामपुर धर्मशाला, नूरपुर, जोगिंदरनगर, बिलासपुर, देहरा, नाहन और ऊना में आक्रोशित जनता ने प्रदर्शन करके आवाज बुलंद की है। अब बांग्लादेश को मुंहतोड़ जवाब देने का वक्त आ गया है। भारत में घुसपैठ से आए दो करोड़ बांग्लादेशी मुसलमानों की पहचान युद्ध स्तर पर की जाए। उनके नकली दस्तावेज बनाने वाले नेताओं, अधिकारियों एवं कर्मचारी वर्ग पर कड़ी कार्यवाही हो। खोजे गए सभी घुसपैठियों को तुरन्त एकमुश्त वापस बांग्लादेश भेजा जाए। इस्लाम के स्कॉलर मुसलमानों तथा विशिष्ट नेताओं का एक शिष्टमंडल बांग्लादेश भेजा जाये, जो हिन्दुओं की सुरक्षा हेतु वहां की सरकार को आगाह करे। भारत सरकार आर्थिक सहित कई प्रकार के प्रतिबन्ध लगाकर भी बांग्लादेश की सरकार पर दबाव बना सकती है।

चिन्तन

भारत की पंथ निरपेक्षता और इस्लामिक कट्टरवाद

- बलवीर पुज

गत 26 नवंबर को देश में 75वां संविधान दिवस मनाया गया। इस अवसर पर पुरानी संसद के सेंट्रल हॉल में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने संयुक्त सभा को संबोधित किया। इस दौरान सिक्का-डाक टिकट के साथ संस्कृत और मैथिली भाषा में संविधान की प्रतियां भी जारी की गई। विश्व के इस भूभाग में भारत ही एकमात्र लोकतांत्रिक और पंथनिरपेक्ष राष्ट्र है, जो दुनिया में अपना खोया मान-सम्मान पुन: अर्जित कर रहा है जबकि भारत के पड़ोस में चीन अधिनायकवादी है, तो पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान कट्टरपंथी इस्लामी। इन चारों देशों में लोकतंत्र, पंथनिरपेक्षता और मानवाधिकारों का कोई स्थान नहीं है। यद्यपि नेपाल और श्रीलंका लोकतांत्रिक है, परंतु बीते कुछ वर्षों से वहां चीनी वामपंथ के कारण इनका पतन हो रहा है। क्या भारत सिर्फ इसलिए 'पंथनिरपेक्ष' है, क्योंकि हमारा संविधान ऐसा है? जब भारत का 14 अगस्त 1947 को विभाजन हुआ तब देश का एक तिहाई हिस्सा, इस आधार पर तकसीम कर दिया गया था कि मुसलमानों को अपनी पहचान और मजहब की कथित 'सुरक्षा' हेतु अलग 'पाक' जमीन चाहिए। इस्लामी कब्जे वाले यह क्षेत्र पाकिस्तान और बांग्लादेश हैं। तब होना तो यह चाहिए था कि खंडित भारत भी स्वयं को 'हिंदू-राज्य' घोषित करता। परंतु ऐसा नहीं हुआ।

भारत को बहुलतावाद और पंथनिरपेक्षता की प्रेरणा किससे मिलती है? स्वतंत्रता के बाद राष्ट्र निर्माताओं ने दो वर्ष, 11 माह और 18 दिन बाद गहन-मंथन के पश्चात् भारतीय संविधान का प्रारूप तैयार किया। तब इसके तत्कालीन स्वरूप को हिंदी-अंग्रेजी में प्रसिद्ध सुलेखक प्रेम बिहारी नारायण रायजादा ने कलमबद्ध किया था, तो प्रसिद्ध चित्रकार नंदलाल बोस ने इसकी दोनों मूल प्रतियों को अद्भुत चित्रों के साथ भारतीय इतिहास और परंपरा से जोड़ने का ऐतिहासिक काम किया। इनमें नटराज (शिवजी), श्रीराम, श्रीकृष्ण, भगवान गौतमबुद्ध, भगवान महावीर, मोहनजोदड़ो, मौर्य, गुप्त आदि कालों के साथ नालंदा विश्वविद्यालय, छत्रपति शिवाजी महाराज, गुरु गोबिंद सिंह जी, गांधी जी, नेता जी बोस इत्यादि के सुंदर चित्र हैं।

यह कोई कलाकृति नहीं, बल्कि भारत की वैदिककाल से गणतंत्र बनने की विकास यात्रा का संस्मरण है। यही कारण है कि अनेकों षडयंत्रों, मजहबी हमलों और सामाजिक घालमेल के बाद भी भारत का बहुलतावादी चरित्र अक्षुण्ण है। भारत अनादिकाल से पंथनिरपेक्ष इसलिए भी है क्योंकि यहां के बहुसंख्यक हजारों वर्षों से हिंदू हैं, जिनके सनातन दर्शन का आधार बहुलतावाद, सह-अस्तित्व और समग्रता है। क्या यह सच नहीं कि जब 1980-90 के दौर में इस्लाम बहुल कश्मीर से हिंदुओं को उनकी पूजा-पद्धति के कारण स्थानीय मुस्लिमों द्वारा मारा, उनकी महिलाओं से बलात्कार और मंदिरों को तोड़ा जा रहा था, जिसके कारण उन्हें पलायन के लिए मजबूर होना पड़ा, तब संपूर्ण देश में संविधान, सर्वोच्च न्यायालय और लोकतंत्र का राज था? इसके उलट, जब सदियों पहले दुनिया के कोनों से मजहबी अत्याचारों के कारण सीरियाई ईसाइयों, यहूदियों और पारसियों ने अपना उद्गमस्थल छोड़कर हिंदू प्रधान भारत में शरण ली, तब न केवल स्थानीय हिंदू-बौद्ध राजाओं और संबंधित प्रजा ने उनका स्वागत किया, साथ ही उन शरणार्थियों को अपनी पूजा-पद्धति, जीवनशैली और परंपरा को अपनाने की स्वतंत्रता भी दी। सन् 629 में तत्कालीन केरल के राजा चेरामन पेरुमल ने कोडंगलूर में चेरामन जुमा मस्जिद का निर्माण पैगंबर साहब के जीवनकाल में कराया था, जोकि अरब के बाहर बनने वाली विश्व की पहली मस्जिद थी। यह समरस, सहिष्णु, शांतिपूर्ण और बहुलतावादी परंपरा तब भंग हुई, जब आठवीं शताब्दी में अरब से इस्लाम के खालिस स्वरूप का, तो यूरोप से 16वीं शताब्दी में ईसाइयत का अपने स्वाभाविक मज़मून के साथ दूसरी बार भारत में आगमन हुआ, जिसके अनुसार—उनके मजहब द्वारा घोषित ईश्वरीय व्यवस्था ही 'एकमात्र सत्य और अन्य सभी झूठे' है।

वर्ष 712 में अरब आक्रांता मोहम्मद बिन कासिम ने सिंध पर हमला करके भारत में इस्लाम के नाम मजहबी दमन का सूत्रपात किया था। उसी मानस से प्रेरित होकर अगले एक हजार वर्षों में गजनी, गोरी, खिलजी, तुगलक, बाबर, अकबर, जहांगीर, औरंगजेब, टीपू सुल्तान आदि आक्रांताओं ने यहां की मूल सनातन संस्कृति और प्रतीकों को क्षत-विक्षत किया। स्वतंत्रता के बाद खंडित भारत 'हिंदू-राज्य' नहीं बना और न ही ऐसा आज भी संभव है। परंतु भारत अघोषित 'हिंदू-राष्ट्र' है, क्योंकि इसकी सामाजिक, समरस और सौहार्दपूर्ण हिंदुत्व जीवनशैली, सनातन चिंतन द्वारा जनित है। विश्व के इस भूक्षेत्र में जहां-जहां इसके मूल सनातन-चरित्र का पतन हुआ, वहां-वहां लोकतंत्र, बहुलतावाद और पंथनिरपेक्षता ने दम तोड़ दिया। पिछले एक हजार वर्षों में अफगानिस्तान, पाकिस्तान, बांग्लादेश और कश्मीर का घटनाक्रम इसका जीवंत प्रमाण है।◆◆◆

मृत्यु से साक्षात्कार

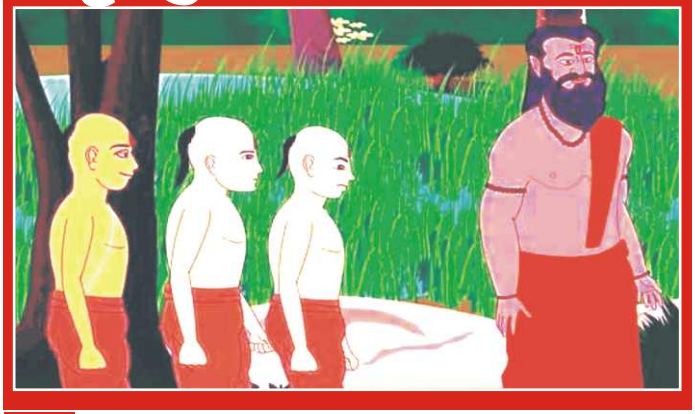

तीन मित्रों ने मृत्यु का साक्षात्कार करने की इच्छा एक महात्मा के समक्ष रखी। महात्मा ने सामने एक गुफा की ओर इशारा करते हुए कहा, तुम लोग उस गुफा में जाओ। वहां मृत्यु से तुम्हारा साक्षात्कार हो जाएगा। तीनों तेजी से चलकर गुफा तक पहुंचे। गुफा में झांका तो देखा वहां तो सोने का ढेर लगा है। उन्होंने एक दूसरे से कहा, मृत्यु तो यहां कहीं नहीं है। उसके बदले तो सोने का ढेर दिखाई दे रहा है। अभी यह सोना अपने-अपने घर ले चलें। बाद में फिर इस गुफा में आकर मृत्यु को ढूंढ़ लेंगे। इस विचार-विमर्श के बाद सोना घर ले जाने पर विचार हुआ। एक ने कहा, तुम दोनों पास के गांव से रोटी और पानी ले आओ। मैं सोने की रखवाली करता हूं। दो साथी। भोजन और पानी लाने चले। पहला गुफा में ही रहा।

थोड़ी देर में एक साथी भोजन लेकर लौटा। गुफा में जैसे ही उसने प्रवेश किया। वहां रखवाली के लिए मौजूद साथी ने तलवार से उसकी हत्या कर दी। एक और साथी जब थोड़ी देर बाद पानी लेकर घुसा तो उसे भी मौत के घाट उतार दिया। दोनों साथियों को ठिकाने लगाने के बाद उसने सोचा कि अब सब कुछ निरापद हो गया। उसने उनका लाया भोजन खाकर सारा सोना अकेले ही घर ले जाने का निर्णय किया। लेकिन भाग्य की विडंबना ! रोटी खाते ही उसे चक्कर आया और वह चल बसा। रोटी लाने वाले साथी ने उसमें जहर मिला दिया था। उसने सोचा था कि बाकी दो को जहर मिला खाना खिलाकर खत्म कर दूंगा और संपूर्ण सोने का मालिक बन जाऊंगा। लेकिन ऐसा नहीं हो सका। हां, तीनों साथियों ने गुफा में मृत्यु के दर्शन जरूर कर लिए।◆◆◆

सबसे बड़ा कर्त्तव्य

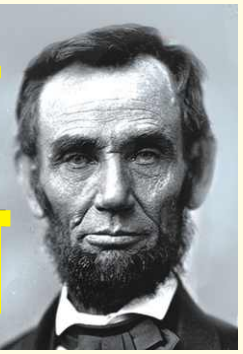

अब्राहम लिंकन बहुत गरीब थे। उनका परिवार बड़ी तंगी में दिन गुजार रहा था। एक बार लिंकन के परिवार को भूखा रहते दो दिन बीत गए। आखिर डोरी और मछली का कांटा उठाकर मछलियां पकड़ने वह नदी पर चले गए। नदी पर पहुंचकर लिंकन कांटा लगाकर मछली की प्रतीक्षा करने लगे। वह मन ही मन प्रार्थना कर रहे थे कि बहुत सारी मछलियां मिल जाएं ताकि दो दिन से भूखा परिवार पेट भर खाना खा सके। लेकिन दुर्भाग्य से शाम तक एक ही मछली फंसी। लिंकन ने उसे ही पर्याप्त समझकर घर की ओर रुख किया। वे रात होने से पहले घर पहुंचना चाहते थे ताकि भूखे भाई-बहन सो न जाएं। वे जल्दी-जल्दी घर की ओर बढ़ने लगे। आधे रास्ते में उन्होंने अपने देश के एक सिपाही को देखा। सिपाही ने लिंकन के सलाम का जवाब देने पर पूछा, 'बच्चे, यह मछली कहां से लाए हो ?'

'मैं शिकार करके लाया हूं जनाब!' लिंकन ने कहा। सिपाही बोला, 'युद्ध क्षेत्र में रहने के कारण मुझे मछली खाए बहुत दिन हो गए हैं। यदि हो सके तो मुझे यह दे दो।' लिंकन सोच में पड़ गए। उन्हें अपने भूखे भाई-बहन याद आ रहे थे, दूसरी ओर था देश का सिपाही। आखिर उन्होंने मछली सिपाही की ओर बढ़ा दी और कहा, 'आप ही मेरे और देश के संरक्षक हैं। यह मछली तो क्या मेरे प्राण भी आपके लिए हाजिर हैं।' लिंकन ने खाली हाथ लौटकर मां को सारी बात बताई तो मां ने कहा, 'बेटे तुम महान हो। मैं प्रसन्न हूं कि तुमने देश के सिपाही की सेवा करके अपना कर्त्तव्य पूरा किया है और मुझे आशा है कि भविष्य में भी ऐसा ही करोगे।'◆◆◆

बांग्लादेश के हिन्दुओं

की रक्षा करने का हर संभव प्रयास करे सरकार

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का केंद्र सरकार से आग्रह

हाल ही में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले की ओर से एक वक्तव्य जारी करके भारत सरकार से बांग्लादेश के हिन्दुओं की रक्षा करने का हर संभव प्रयास करने तथा इसके समर्थन में वैश्विक अभिमत बनाने हेतु यथाशीघ्र कदम उठाने का आह्वान किया गया है।

– डॉ. महेंद्र ठाकुर

भारत के पड़ोसी देश बांग्लादेश में हिन्दुओं का उत्पीड़न चरम पर है। अपने ट्रैक रिकॉर्ड के अनुसार रेडिकल इस्लामिस्टों द्वारा काफिरों (हिन्दुओं) पर अत्याचार किये जा रहे हैं। अफगानिस्तान और पाकिस्तान में हिन्दुओं के सफाए के बाद अब इस्लामिक देश बांग्लादेश में भी हिन्दुओं के सफाए के लिए रेडिकल इस्लाम का अत्याचार पूरी दुनिया के सामने हैं। बांग्लादेश के जन्म के बाद से ही वहाँ के हिन्दुओं पर अत्याचार हो रहे थे, लेकिन इन दिनों इस्लामिक अत्याचारों की गति और प्रवृति बहुत ज्यादा बढ़ गयी है। बांग्लादेश का हिन्दू रेडिकल इस्लाम के अत्याचारों से बुरी तरह से पीड़ित है।

भारत में फिलिस्तीन, ईरान और दूसरे रेडिकल इस्लामिक देशों पर रुदाली रुदन करने वालों के मुंह से बांग्लादेश के हिन्दुओं के लिए एक भी शब्द नहीं निकल रहा है। बांग्लादेश के हिन्दुओं की सुरक्षा के लिए भारत सरकार भी अब तक कोई ठोस कदम नहीं उठा पायी है और यदि ऐसा कोई ठोस कदम उठाया भी गया है तो धरातल पर उसका कोई असर नहीं दिख रहा है।

हाल ही में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले की ओर से एक वक्तव्य जारी करके भारत सरकार से बांग्लादेश के हिन्दुओं की रक्षा करने का हर संभव प्रयास करने तथा इसके समर्थन में वैश्विक अभिमत बनाने हेतु यथाशीघ्र कदम उठाने का आह्वान किया गया है। यह पहली बार नहीं है जब संघ ने बांग्लादेश के हिन्दुओं के प्रति अपने प्रस्तावों में अपनी चिंता प्रकट की है। सुप्रसिद्ध लेखक श्री रतन शारदा की पुस्तक 'कॉन्फ्लिक्ट रेजोल्यूशन: द आरएसएस वे' इसके लिए पढ़ी जा सकती है। संघ सन् 1971 से ही बांग्लादेश के प्रति भारत के कर्तव्य पर सरकार का ध्यान आकर्षण कराता रहा है। इस हेतु संघ ने सन् 1971 में अपनी अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल की बैठक में एक प्रस्ताव पारित किया था। इसके बाद संघ ने सन् 1978 में बांग्लादेश में हिन्दु

उत्पीडन् पर एक और प्रस्ताव पारित किया था। इस प्रस्ताव में संघ ने भारत सरकार से बांग्लादेश सरकार पर दबाव डालने तथा वहाँ की वस्तुस्थिति को समझने के लिए एक प्रतिनिधि-मंडल भेजने का आग्रह किया था।

इसके बाद संघ ने अपनी अ. भा. प्रतिनिधि सभा की 1982 में हुई बैठक में पश्चिम बंगाल और बिहार में बढ़ती बांगलादेशी घुसपैठ पर चिंता प्रकट करते हुए एक प्रस्ताव पारित किया था। संघ ने 1988 में भी बांग्लादेश में बढ़ते मुस्लिम कट्टरवाद और सन् 1989 में बांग्लादेशी धर्मान्धता के कारण हिन्दुओं पर हो रहे अत्याचारों को लेकर प्रस्ताव पारित किये थे। संघ के वर्तमान सरकार्यवाह अपने वक्तव्य में जो आज कह रहे हैं वही सब 1989 के प्रस्ताव में भारत सरकार को अपने कर्तव्य की याद कराते हुए संघ ने कहा था, 'प्रतिनिधि सभा भारत सरकार से आग्रह करती है कि वह संयुक्त राष्ट्रसंघ एवं सार्क जैसे अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर इस समस्या को उठाकर विश्व जनमत जगाये और उन सभी उपायों को अपनाये जिससे बांग्लादेश के शासको को वहाँ के हिन्दु एवं अमुस्लिम मतावलम्बियों के प्रति न्याय करने तथा 1947 के विभाजन के समय भी दिये गये अपने वचनों का पालन करने के लिए बाध्य किया जा सके।' इसके बाद संघ ने सन् 1989 में ही बांग्लादेशी चाकमा शरणार्थियों का मुद्दा उठाया और प्रस्ताव पारित किया था। फिर 1991 में बांग्लादेशी घुसपैठियों की समस्या पर चिंता प्रकट करते हुए प्रस्ताव पारित किया था। इसी तरह सन् 1992 में भारत सरकार द्वारा तीन बीघा-नवीनतम समर्पण का मुद्दा उठाया और प्रस्ताव के माध्यम से अपनी चिंता प्रकट की थी। इसके बाद संघ ने सन् 1993 में बांग्लादेश में हिंदुओं और बौद्ध चाकमाओं पर मुसलमानों द्वारा किये जा रहे अत्याचारों पर चिंता प्रकट करते हुए एक प्रस्ताव पारित किया था। इस प्रस्ताव में संघ ने भारत सरकार को अविलम्ब निम्नलिखित तीन कदम उठाने के सुझाव भी दिए थे :

- संयुक्त राष्ट्र संघ से आग्रह कर भारत में आश्रय लिये चाकमा व अन्य हिन्दु शरणार्थियों को शरणार्थी स्तर प्रदान करवाना।

- पर्वतीय चट्टग्राम की चाकमा व अन्य जनजातियों तथा बांगलादेशी हिन्दुओं की हृदयद्रावक परिस्थिति को अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर उठाना तथा उन्हें वापस भेजने पर तभी सहमत होना जब बांग्लादेश में उनके सम्मानपूर्ण एवं शान्तियुक्त जीवनयापन को आश्वस्त करने वाले समझौतों पर हस्ताक्षर होकर उनके कार्यान्वयन की प्रक्रियाएं भी तय कर ली जायें।
- बांग्लादेशी सरकार को चेतावनी देना कि यदि वह चाकमा सहित हिन्दुओं के विरुद्ध अपनी नापाक योजनाओं से बाज नहीं आती तो भारत को उससे जमीन माँगने का अधिकार रहेगा जिस पर इन शरणार्थियों को बसाया जा सके।

इसके बाद संघ ने वर्ष 1994 में 'बांग्लादेश का अपने ही हिन्दू व अन्य अल्पसंख्यकों के विरुद्ध जेहाद' शीर्षक से एक प्रस्ताव पारित किया था जिसमें भारत सरकार का आह्वान करते हुए कहा गया था कि 'भारत सरकार का यह दायित्व है कि वह बांग्लादेश में हिन्दू व अन्य अल्पसंख्यकों के साथ हो रहे दुर्व्यवहार के विरुद्ध अपनी आवाज बुलन्द करे क्योंकि देश के विभाजन के समय और उसके बाद भी उसने उनकी हित रक्षा करते रहने का अभिवचन दिया था। उसे चाहिए कि वह उभयपक्षीय स्तर, अंतर्राष्ट्रीय स्तर तथा मानवाधिकार संगठनों के स्तर पर सर्वतोमुखी प्रयत्नों के द्वारा बांग्लादेश में अनुकूल वातावरण पैदा करवाने हेतु सचेष्ट हो और किसी निष्पक्ष अभिकरण द्वारा सतत निगरानी की व्यवस्था करवाये जिससे मानव त्रासदी के इस दुःखद इतिहास की पुनरावृत्ति न हो।'

आज मीडिया और सोशल मीडिया के माध्यम से हमें 'बायकॉट बांग्लादेश' ट्रेंड देखने को मिल रहा है और पश्चिमी बंगाल और दूसरे पूर्वोत्तर राज्यों सहित भारत के अन्य हिस्सों में बांग्लादेश के बायकॉट करने को लेकर लोगों की प्रतिक्रिया भी मिल रही है। भारत का हिन्दू समाज भारत सरकार से बांग्लादेश के रेडिकल इस्लामवादी सरकार और जिहादियों के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही की अपेक्षा भी कर रहा है। संघ की अ. भा. प्र. स. द्वारा वर्ष 2002 में बांग्लादेशी हिन्दुओं पर होने वाले अत्याचारों पर चिंता प्रकट करते हुए एक प्रस्ताव पारित किया था जिसमें संघ ने भारत सरकार को बांग्लादेशी हिन्दुओं के प्रति उसके कर्तव्य की याद दिलाते हुए सुझाव दिया था कि :

– जो हिन्दू भारत में आए हैं उन्हें शरणार्थियों का दर्जा दिया जाना चाहिए और जब तक वे भारत में रहते हैं तब तक उन्हें संयुक्त राष्ट्र संघ के मानदण्डों के अनुसार सभी सुविधाएँ दी जानी चाहिये। देश विभाजन के समय अपने देश के सभी प्रमुख नेताओं ने यह आश्वासन दिया था कि वहाँ के हिन्दुओं की सुरक्षा का दायित्व भारत निभाएगा।

– बांग्लादेश की सरकार को यह बात दृढ़तापूर्वक तथा स्पष्ट शब्दों में बताना होगा कि वह इन हिन्दू बन्धुओं को सम्मान एवं सुरक्षा के साथ वापस बुला ले और उनके मूल स्थानों पर पुनः बसा दे। बांग्लादेश सरकार को होश में लाने के लिए कुछ कठोर कदम उठाए जाने चाहिए, जैसे चावल, आलू, प्याज, मांस आदि खाद्य पदार्थों का हमारे देश से बांग्लादेश में निर्यात बंद कर देना। अस्थायी रूप से फरक्का बाँध से बांग्लादेश को दिये जाने वाले जल के प्रवाह को भी रोक देना चाहिए। इसके साथ ही संघ ने यह माँग की थी कि यदि बांग्लादेश की सरकार तब भी नहीं मानती तो सरदार पटेल द्वारा 1949 में की गई माँग का अनुसरण करते हुए भारत सरकार बांग्लादेश से अलग भूखण्ड की माँग करे ताकि वहाँ के हिन्दू नागरिकों को सम्मान एवं सुरक्षा सहित बसाया जा सके।

इस प्रस्ताव के चारों बिन्दुओं को ध्यानपूर्वक पढने से पता चलता है कि बांग्लादेशी हिन्दुओं की समस्याओं का समाधान संघ बहुत पहले दे चुका है। लेकिन, भारत की सरकारों ने संघ के प्रस्तावों पर उदासीन रख अपनाया। इसके बाद संघ ने वर्ष 2013 में प्रस्ताव पारित करके बांग्लादेश और पाकिस्तान के उत्पीड़ित हिन्दुओं की समस्याओं का निराकरण करने की मांग की। अपने प्रस्ताव में संघ ने भारत सरकार से कहा था कि 'सरकार यह कह कर बच नहीं सकती कि यह उन देशों का आन्तरिक विषय है।'

इसके बाद संघ ने वर्ष 2021 में बांग्लादेश में हिंदुओं पर हुए उन्मादी इस्लामिक आक्रमण की कड़ी भर्त्सना करते हुए एक प्रस्ताव पारित किया। इस मुद्दे पर सविस्तार प्रकाश डालते हुए संघ ने विश्वास दिलाते हुए कहा कि 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सहित संपूर्ण हिंदू समाज बांग्लादेश के हिंदू और अन्य प्रताड़ित अल्पसंख्यकों के इस कठिन एवं चुनौतीपूर्ण समय में उनके साथ डटकर खड़ा है।'

संघ के वर्तमान सरकार्यवाह का वक्तव्य बांग्लादेश के हिन्दू समाज को दिलाये गए उस विश्वास का पुनः प्रकटीकरण है तथा भारत सरकार को बांग्लादेशी हिन्दुओं के प्रति उसके कर्तव्य को याद कराने का उद्यम भी है। काश! भारत की सरकारों ने संघ के प्रस्तावों को गंभीरता से लिया होता और उनके अनुसार कदम उठाये होते तो आज बांग्लादेश में हिन्दुओं की ऐसी दुर्दशा नहीं होती जैसी आज हो रही है। वर्तमान भारत सरकार से अपेक्षा है कि वह संघ के प्रस्तावों में दिए गए सुझावों पर अमल करेगी और बांग्लादेश में हिन्दुओं को रेडिकल इस्लामिस्टों के अत्याचारों से मुक्ति दिलाने के लिए हरसंभव प्रयास करेगी। ◆◆◆ **डिस्कलेमर : उपरोक्त विचार लेखक के निजी विचार हैं।**

बांग्लादेश में हिंदुओं पर अमानवीय अत्याचार

भारत में आदिकाल से ही आर्य यहां के मूल निवासी रहे हैं जिन्हें बाद में विदेशियों द्वारा हिंदू नाम दिया गया। सदियों यों के उतार-चढ़ाव के बाद संस्कृति की मूल अवधारणाएं बनी रहीं जो आज भी जीवंत हैं। विश्व के विभिन्न भागों में हिंदू संस्कृति के अवशेष आज भी प्राप्त हो रहे हैं, जो किसी समय भारत के विश्व गुरु होने के अकाट्य प्रमाण हैं। यह भी सच है कि समय-समय पर विदेशी आक्रांताओं ने भारत पर आक्रमण करते हुए यहां की धन संपत्ति, वैभव को लूटा और उन्हीं के कुछ वंशज भी यहां निवास करते रहे। जनसंख्या में बढ़ोतरी होती रही और राजनीतिक आधार पर कुछ कट्टरपंथियों ने हिंदू मुस्लिम एकता में दरार डालते हुए भारत का विभाजन कर डाला। पहले पाकिस्तान फिर बांग्लादेश का जन्म हुआ। परंतु समस्याएं वहीं की वहीं रहीं। पाकिस्तान और बांग्लादेश का विभाजन होने के बाद भी अधिकांश मुस्लिम भारत में डटे रहे। कहने को तो वे भारत को अपना प्रिय देश मानते हैं परंतु उनमें से कुछ ऐसे भी कट्टरपंथी हैं जो भारत में केवल अस्थिरता चाहते हैं और यहां हो रहे विकास को रोकने तथा संपत्ति को नष्ट करने के लिए कई तरह के षड्यंत्र रचते रहते हैं। आतंकवाद, अलगाववाद, जिहाद, भारत तेरे टुकड़े होंगे ऐसे बहुत सारे नारे देकर भारत को तोड़ने के अनेक प्रयास किए जाते रहे हैं।

हाल ही में जब एक षड्यंत्र के तहत बांग्लादेश में शेख हसीना की सरकार को बर्खास्त करके यूनुस को प्रधानमंत्री बनाया गया तब से हिंदुओं पर निरंतर अत्याचार हो रहे हैं। महिलाओं, बच्चों, बुजुर्गों पर अमानवीय अत्याचार किए जा रहे हैं। उनकी संपत्तियों को जलाया जा रहा है। इसलिए ऐसी मुसीबत की घड़ी में बांग्लादेश के हिंदुओं का साथ दिए जाने की जरूरत है। अब यह भी चर्चा होने लगी है कि अन्य देशों से तो हिंदुओं को वापस लाकर भारत में बसाने के लिए कानून बनाए जा रहे हैं परंतु भारत से हिंदुओं का पलायन होने की स्थिति में उनका ठिकाना कहां होगा। इसलिए बांग्लादेश की स्थिति को गंभीरता से लिए जाने की जरूरत है।

बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचारों को पूरा देश और विश्व समुदाय देख रहा है परंतु हिंदुओं के पक्ष में बहुत कम आवाज उठ रही है। भारतवर्ष के विभिन्न प्रांतों में विभिन्न संगठनों द्वारा हिंदुओं के पक्ष में अवश्य विरोध प्रदर्शन, धरने दिए जा रहे हैं परंतु क्रियात्मक रूप से हिंदुओं को बचाया जाना, उनकी संपत्ति की रक्षा करना, महिलाओं, बच्चों और बुजुर्गों की हिफाजत करना पूरी तरह से संभव नहीं हो पा रहा है और बांग्लादेश में हिंदू आज भी अत्याचारों का सामना कर रहे हैं।

बांग्लादेश में हिंदुओं पर अत्याचार असहनीय एवं निंदनीय हैं। प्रदेश के कई जिलों में हिंदू संगठनों ने रोष रैली निकाल कर उपायुक्तों के माध्यम से राष्ट्रपति को ज्ञापन सौंपे हैं। बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे अमानवीय एवं हृदय विदारक अत्याचारों के विरोध में हिमाचल के विभिन्न स्थानों पर विरोध जताया जा रहा है। वास्तव में कट्टरपंथियों द्वारा महिलाओं और बच्चों के खिलाफ हिंसा, अपहरण और शिक्षा से वंचित करने जैसी घटनाएं तेजी से बढ़ रही हैं। यह न केवल बांग्लादेश के संवैधानिक अधिकारों बल्कि अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार कानूनों का भी उल्लंघन है। ज्ञापन में भारत सरकार से बांग्लादेश सरकार पर दबाव बनाने, संयुक्त राष्ट्र से स्वतंत्र जांच आयोग गठित करने और हिंसा में शामिल अपराधियों को सजा दिलाने की मांग की गई। साथ ही प्रभावित समुदायों के पुनर्वास और महिलाओं व बच्चों के अधिकारों की रक्षा के लिए विशेष कदम उठाने की अपील की गई। हिमाचल में मंगलवार को किए गए प्रदर्शन के दौरान व्यापारिक, सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक संगठनों का पूर्ण समर्थन मिला। प्रदर्शन में हजारों लोग शांतिपूर्ण ढंग से एकत्र हुए और बांग्लादेश में धार्मिक अल्पसंख्यकों की सुरक्षा के लिए अंतरराष्ट्रीय हस्तक्षेप की मांग की।

बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे सामूहिक अत्याचारों की विरोध में देश के विभिन्न क्षेत्र में विरोध प्रदर्शन किया जा रहे हैं तथा लगातार यह मांग की जा रही है की बांग्लादेश सरकार द्वारा हिंदुओं के हितों को सुरक्षित किए जाने के प्रयास किए जाएं और उनकी संपत्ति को नष्ट करने से उपद्रवियों को रोका जाए लोगों की यह भी मांग है कि भारत सरकार को इस विषय में दखल देते हुए हिंदुओं की सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए कठोर कदम उठाने की भी जरूरत है।◆◆◆

अकेला नहीं बांग्लादेशी हिन्दू

बांग्लादेश में हिंदुओं पर अमानवीय अत्याचार के विरूद्ध प्रदर्शन व रैलियां

बांग्लादेश में हिंदुओं और अन्य अल्पसंख्यकों पर हो रहे अत्याचार, नरसंहार और मंदिरों को ध्वस्त करने के विरूद्ध हिमाचल में लगातार विरोध प्रदर्शन हो रहे हैं। डिफेंडर्स ऑफ ह्यूमन राइट्स संस्था के बैनर तले शिमला में भी सीटीओ चौक पर विशाल जनसभा का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शन में जिला शिमला की कई धार्मिक और सामाजिक संस्थाओं ने भाग लिया और बांग्लादेश में हो रहे अमानवीय व्यवहार की निंदा करते हुए जमकर नारेबाजी की। डिफेंडर्स ऑफ ह्यूमन राइट्स संस्था के सदस्य प्रो. अजय श्रीवास्तव ने कहा कि धार्मिक अल्पसंख्यकों के साथ बांग्लादेश में 5 अगस्त से लेकर निरंतर हो रहा अमानवीय व्यवहार गंभीर चिंता का विषय है। हिन्दू चाहे बांग्लादेश में हैं या किसी अन्य देश में, हमारे भाई हैं, उनके साथ दुर्व्यवहार कदापि सहन नहीं किया जाएगा। उन्होंने समस्त जनता से आह्वान किया कि सभी एकजुट होकर हिन्दू भाइयों के लिए आवाज बुलंद करते रहें। इस अवसर पर उपस्थित रामकृष्ण मिशन हिभाचल प्रदेश शिमला के सचिव स्वामी तन्महिमानंद जी महाराज ने कहा कि बांग्लादेश में हिंदुओं के उत्पीडन् के खिलाफ आवाज सभी को उठानी होगी। इस्लामी देशों के साथ-साथ भारत में हिंदू समाज को संभावित खतरों से सतर्क रहने की जरूरत है। उन्होंने जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों, विशेषकर हिंदुओं के खिलाफ अत्याचारों की स्थिति बेहद गंभीर है, जिससे संपूर्ण हिंदू समाज चिंतित है। इनके अलावा देवभूमि संघर्ष समिति के सह संयोजक मदन ठाकुर, हिंदू जागरण महिला प्रमुख अनिता ठाकुर, अजीत कुमार सहित विभिन्न धार्मिक और सामाजिक संगठनों के पदाधिकारियों और बड़ी संख्या में शिमला के स्थानीय लोगों ने इस विशाल जनसभा का प्रतिनिधित्व किया। प्रदर्शन में लोग शांतिपूर्ण ढंग से शामिल हुए और अंतरराष्ट्रीय समुदाय से बांग्लादेश में धार्मिक अल्पसंख्यकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए हस्तक्षेप करने की मांग की गई।◆◆◆

बांग्लादेश में हिंदुओं व बौद्धों की सुरक्षा के लिए संयुक्त राष्ट्र से तुरंत हस्तक्षेप की मांग

राज्यपाल को संयुक्त राष्ट्र के महासचिव के नाम ज्ञापन सौंपा

हिमाचल प्रदेश के प्रमुख सामाजिक, धार्मिक एवं मानवाधिकार संगठनों ने बांग्लादेश के मुद्दे पर संयुक्त राष्ट्र के महासचिव के नाम ज्ञापन राज्यपाल को सौंपा। राज्यपाल ने कहा कि वह ज्ञापन को राष्ट्रपति को अग्रेषित करेंगे ताकि भारत सरकार के माध्यम से उसे संयुक्त राष्ट्र के महासचिव को भेजा जा सके। डिफेंडर्स ऑफ़ ह्यूमन राइट्स के ज्ञापन में बांग्लादेश के हिंदुओं और बौद्धों की सुरक्षा सुनिश्चित किए जाने की मांग की गई है। ज्ञापन में कहा गया कि संयुक्त राष्ट्र हिंदुओं के उत्पीड़न की जांच के लिए एक जांच आयोग बांग्लादेश भेजे और नॉर्वे की नोबेल समिति से मोहम्मद यूनुस से नोबेल शांति पुरस्कार वापस लेने के लिए कहे। राज्यपाल को ज्ञापन सौंपने वालों में रामकृष्ण मिशन, शिमला के सचिव स्वामी तनमहिमा नंद, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत संघ चालक प्रो. वीर सिंह रांगड़ा, विश्व हिंदू परिषद के प्रांत कोषाध्यक्ष राजेंद्र भारद्वाज, डिफेंडर्स ऑफ़ ह्यूमन राइट्स के उपाध्यक्ष बीएम नैंटा, उमंग फाउंडेशन के अध्यक्ष प्रो. अजय श्रीवास्तव, राष्ट्र सेविका समिति की प्रात संचालिका श्रीमती कमलेश शर्मा सहित विभिन्न संगठनों के पदाधिकारी उपस्थित रहे।

महिला सशक्तिकरण की चुनौतियां और समाधान

– डॉ. सुनीता जसवाल

हिमाचल प्रदेश में महिलाओं का सशक्तिकरण सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक क्षेत्रों में प्रगतिशील प्रयासों के माध्यम से एक महत्वपूर्ण विषय बना हुआ है। राज्य ने महिलाओं को समान अधिकार, शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाएं और आत्मनिर्भरता प्रदान करने के लिए कई योजनाओं और नीतियों को लागू किया है। महिला सशक्तिकरण के प्रमुख पहलू निम्न प्रकार से हो सकते है–

शिक्षा और जागरूकता : हिमाचल प्रदेश में महिला साक्षरता दर राष्ट्रीय औसत से बेहतर है। सरकार द्वारा लड़कियों को मुफ्त शिक्षा और छात्रवृत्ति योजनाएं प्रदान की जाती हैं। 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान के तहत बालिकाओं की शिक्षा और उनके अधिकारों के प्रति जागरूकता फैलाई जा रही है।

आर्थिक सशक्तिकरण : स्वयं सहायता समूह के माध्यम से महिलाओं को स्वरोजगार के अवसर दिए जा रहे हैं। हिमाचल प्रदेश में ग्रामीण महिलाओं को कृषि, पशुपालन, और कुटीर उद्योग में शामिल होने के लिए प्रशिक्षण दिया जा रहा है। मुख्यमंत्री युवा आजीविका योजना और प्रधानमंत्री मुद्रा योजना के तहत महिलाओं को उद्यमिता के लिए वित्तीय सहायता मिल रही है।

स्वास्थ्य और कल्याण: 'जननी सुरक्षा योजना' और 'मुख्यमंत्री शगुन योजना' जैसी पहल मातृत्व स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए शुरू की गई हैं। महिलाओं को स्वास्थ्य सेवाएं और पोषण संबंधी कार्यक्रमों से जोड़ा जा रहा है। सुदूर क्षेत्रों में मोबाइल हेल्थ यूनिट्स महिलाओं तक पहुंच रही हैं।

कानूनी और सामाजिक अधिकार : महिलाओं के खिलाफ हिंसा को रोकने के लिए कानून लागू किए गए हैं, जैसे घरेलू हिंसा अधिनियम और यौन उत्पीड़न के खिलाफ सख्त नियम। 'सखी वन-स्टॉप सेंटर' महिलाओं को कानूनी, चिकित्सा, और परामर्श सेवाएं प्रदान कर रहा है।

राजनीतिक सशक्तिकरण : पंचायत और स्थानीय निकायों में महिलाओं के लिए 50 प्रतिशत आरक्षण प्रदान किया गया है। महिलाएं राज्य की राजनीतिक और प्रशासनिक संरचना में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

चुनौतियां :

हालांकि हिमाचल प्रदेश ने महिला सशक्तिकरण में काफी प्रगति की है, फिर भी ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक बंधन, आर्थिक असमानता और लैंगिक भेदभाव जैसी समस्याएं अब भी बनी हुई हैं। हिमाचल प्रदेश में महिलाओं का सशक्तिकरण शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य और सामाजिक अधिकारों पर केंद्रित कार्यक्रमों के माध्यम से धीरे-धीरे सशक्त हो रहा है। सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों के प्रयासों से यह राज्य महिलाओं के लिए एक प्रेरणादायक उदाहरण बन सकता है।

हिमाचल प्रदेश, अपनी सांस्कृतिक समृद्धि और प्राकृतिक सौंदर्य के बावजूद, महिलाओं के लिए कई सामाजिक, आर्थिक और व्यक्तिगत चुनौतियों से भरा हुआ है। जैसे-

शिक्षा और जागरूकता की कमी-

ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की शिक्षा का स्तर अपेक्षाकृत कम है। महिला प्रशासनिक अधिकारियों को कम अहमियत देना, महिला बस चालक को बिना किसी कसूर के घर बिठा देना, महिला पुलिस अधिकारी को सत्य के मार्ग पर चलने की सजा देने के लिए लंबी छुट्टी पर भेज देना आदि महिला सशक्तिकरण के नारे की तथाकथित सच्चाई और खोखलेपन को उजागर करने वाले प्रकरण हैं । परंपरागत दकियानूसी सोच के कारण लड़कियों की शिक्षा तथा काम करने के समान अवसर देने को प्राथमिकता नहीं दी जाती।

स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी :

– दुर्गम क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाओं की उपलब्धता सीमित है।

– गर्भवती महिलाओं को सही समय पर चिकित्सा सहायता नहीं मिल पाती। पोषण की कमी और स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का भी अभाव है।◆◆◆

नर सेवा नारायण सेवा

– यशपाल शर्मा

सेवा भारती

की प्राकृतिक आपदा में प्रेरणादायक भूमिका

सेवा भारती जिला इकाई रामपुर द्वारा सन् 2000 से 2024 तक विकट परिस्थितियों में निरंतर सेवा कार्य किए गए हैं। रामपुर का सेवा क्षेत्र भौगोलिक दृष्टि से बेहद फैला हुआ और दुर्गम है। यह क्षेत्र पहाड़ों एवं नदी-नालों से सुशोभित है और हिमाचल प्रदेश, जिसे देवभूमि कहा जाता है, यहां इनका विशेष महत्व है। रामपुर बुशहर का ऐतिहासिक और पौराणिक महत्व भी सदियों पुराना है।

यहां प्राकृतिक आपदाएं जैसे बादल फटना, भूस्खलन और बाढ़ जैसी घटनाएं आम हैं, जिनसे जान-माल का भारी नुकसान होता है। इस क्षेत्र के लोग नदी-नालों से अपने खेतों की सिंचाई करते हैं, लेकिन आर्थिक स्थिति कमजोर होने के बावजूद सेवा भारती रामपुर इकाई के सदस्य निरंतर सेवा कार्य करते हैं।

महिलाओं और कन्याओं के लिए प्रशिक्षण

सेवा भारती जिला इकाई रामपुर ने सन् 2000 से अब तक महिलाओं और कन्याओं को सिलाई, कढ़ाई और बुनाई जैसे कार्यों का नि:शुल्क प्रशिक्षण दिया है। अब तक लगभग 1500 से अधिक बहनों को आत्मनिर्भर बनाया गया है। साथ ही, संस्कार निर्माण के भी कार्य सतत रूप से किए जा रहे हैं।

श्रीखंड महादेव त्रासदी (31 जुलाई 2024)

पिछले वर्ष क्षेत्र में एक भयानक त्रासदी घटी, जिसका केंद्र श्रीखंड महादेव था, जो 18000 फुट की ऊंचाई पर स्थित है। 31 जुलाई की रात 12 बजे बिजली गिरने से वहां बादल फट गया। पानी और गाद तीन दिशाओं में फैलकर नदियों में जा गिरा, जिसने क्षेत्र में महाविनाश का रूप धारण कर लिया।

प्रभावित क्षेत्र :

बागीपुल (जिला कुल्लू) : कुर्पण खड्ड नदी का जलस्तर बढ़ने से आठ लोगों की जान चली गई। बाहरी राज्यों के साधु-संतों का भी अभी तक पता नहीं चल पाया। करीब 2200 बीघा भूमि नष्ट हो गई और सैकड़ों पशु बह गए।

60 के करीब घर नदी में समा गए।

– यहां करीब 40 लोग मलबे में दब गए, जिनमें मासूम स्कूली बच्चे भी शामिल थे।

– प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, सरकारी स्कूल और विद्युत प्रोजेक्ट पूरी तरह जलमग्न हो गए।

– विद्युत प्रोजेक्ट में कार्यरत कई बाहरी राज्यों के कर्मचारी लापता हो गए।

– पूरा गांव बाढ़ में तबाह होने के साथ-साथ कई परिवार इस आपदा में समाप्त हो गए।

– गानवी में छह परिवार बेघर हुए और भारी बारिश से उपजाऊ भूमि नष्ट हो गई।

सेवा भारती की राहत कार्यवाही

सेवा भारती जिला इकाई रामपुर की टीम और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सदस्य सबसे पहले त्रासदी स्थल पर पहुंचे और राहत कार्य शुरू किया। प्रभावित क्षेत्रों में राहत सामग्री वितरित की गई, जिसमें कंबल, गद्दे, रसोई के बर्तन, राशन किट, तिरपाल और स्वास्थ्य किट शामिल थे।

3 अगस्त 2024 : समेज गांव (कुल्लू-शिमला सीमा) में 40 प्रभावित परिवारों को राहत सामग्री प्रदान की गई।

4 अगस्त 2024 : बागीपुल (कुल्लू) और केदस में 20 और 25 बेघर परिवारों को राहत सामग्री दी गई।

5 अगस्त 2024 : गानवी (शिमला) में छह परिवारों को राशन और अन्य आवश्यक सामग्री वितरित की गई।

सेवा भारती जिला इकाई रामपुर ने कठिन परिस्थितियों में अपनी सेवा भावना का परिचय दिया और त्रासदी के समय पीड़ितों की मदद के लिए तत्पर रही।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यंतु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।

व्यास अध्ययन केंद्र फागली द्वारा आयोजित संगोष्ठी में श्रीमान प्रताप समयाल का उद्बोधन

भारत के उत्थान के लिए पंच परिवर्तन की जरूरत

व्यास अध्ययन केंद्र फागली द्वारा गुरूवार को डॉ. हेडगेवार भवन के सभागार में 'पंच परिवर्तन से राष्ट्रीय पुनरूत्थान' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में व्यास अध्ययन केंद्र फागली द्वारा आयोजित इस संगोष्ठी में कोटशेरा महाविद्यालय एवं संस्कृत महाविद्यालय फागली के लगभग 90 छात्रों ने भाग लिया। कार्यक्रम में हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के गणित विभाग के प्रो. खेमचंद ठाकुर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे, जबकि प्रांत प्रचार प्रमुख श्री प्रताप समयाल जी मुख्य वक्ता के रूप में शामिल हुए। इसके अलावा, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय गणित विभाग की आचार्य प्रो. ज्योति प्रकाश ने विशिष्ट अतिथि के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

मुख्य वक्ता श्री प्रताप समयाल जी ने 'पंच परिवर्तन से राष्ट्रीय पुनरूत्थान' के पांच महत्वपूर्ण विषयों पर छात्रों और संगोष्ठी में उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों के साथ गहन चर्चा की। अपने उद्बोधन में उन्होंने कहा कि भारत को माता के रूप में मानकर जय करने वाला भारत विश्व में पहला देश है। यही कारण है कि भारत को 'विश्व गुरु' और 'दुनिया के सिरमौर' के रूप में पहचाना जाता था। उन्होंने यह भी कहा कि देश के विकास के लिए सभी के प्रयास जरूरी हैं, और इसके लिए पंच परिवर्तन की आवश्यकता है।

श्री प्रताप जी ने राष्ट्र के पुनरूत्थान के लिए इन पांच महत्वपूर्ण विषयों पर विचार साझा किए :

सामाजिक समरसता: उन्होंने कहा कि भारत को मजबूत बनाने के लिए हमें समाज में जातीय भेदभाव समाप्त कर एकजुट होना होगा। सभी का जलाशय, देवालय, शमशान एक होने चाहिए। ऐसे छोटे-छोटे प्रयासों से हमें सामाजिक समरसता का संदेश देना है।

पर्यावरण संरक्षण : उन्होंने पर्यावरण संरक्षण के महत्व पर बल देते हुए कहा कि हम पॉलीथीन हटाएं, पानी बचाएं और पेड़ लगाएं। सामूहिक प्रयासों से ही हम पर्यावरण को सुरक्षित रख

सकते हैं।

स्वत्व का भाव : उन्होंने कहा कि भारत का इतिहास समृद्ध है, और हमें अपने देश की प्राचीन धरोहर और योगदान को समझना चाहिए। योग भारत की एक अद्वितीय देन है, जिसे पूरी दुनिया मान्यता देती है।

नागरिक कर्त्तव्य : उन्होंने कहा कि भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है, और हमारा संविधान विश्व में सर्वश्रेष्ठ है। अधिकारों के साथ-साथ नागरिकों को अपने कर्त्तव्यों को समझना और पालन करना जरूरी है।

कुटुम्ब प्रबोधन: उन्होंने संयुक्त परिवार की महत्ता पर जोर दिया और कहा कि हिन्दू आदर्श परिवार के सिद्धांतों पर विचार करना चाहिए। सामूहिक भोजन, भजन और भ्रमण को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इन विषयों को लेकर छात्रों ने कई सवाल भी किए और मुख्य वक्ता की तरफ से उनका समाधान भी सुझाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. खेमचंद ठाकुर जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि पंच परिवर्तन हमारे भारतीय संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है। ये पांचों विषय त्रेतायुग से लेकर आधुनिक युग तक हमारे समाज में महत्वपूर्ण रहे हैं। उन्होंने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उदाहरण देते हुए कहा कि त्रेतायुग में भी इसे बहुत प्रभावी रूप से इस्तेमाल किया जाता था। अंत में उन्होंने छात्रों से आह्वान किया कि वे आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ प्राचीन शिक्षा और वेदों का अध्ययन भी करें, जिससे वे गहरे ज्ञान की प्राप्ति कर सकें। इस अवसर पर संस्कृत महाविद्यालय से डॉ. दिनेश जी, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय से डॉ. तरूण जी सहित अन्य गणमान्य व्यक्तियों और छात्रों ने भी विचार-विमर्श में सक्रिय रूप से भाग लिया।◆◆◆

26 जनवरी 2025 को कर्तव्य पथ पर दिखेगी भारत-रूस मैत्री की प्रतीक रोरिक आर्ट गैलरी नग्गर कुल्लू

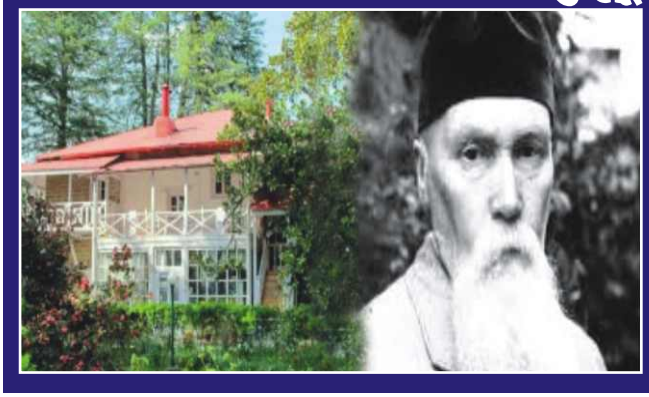

वर्ष 2025 में कर्तव्य पथ पर भारत-रूस की मैत्री की मिसाल निकोलस रोरिक आर्ट गैलरी की झलक दिखेगी। हिमाचल प्रदेश 26 जनवरी को दिल्ली में गणतंत्र दिवस परेड में रूस और भारत की सांस्कृतिक विरासत का प्रदर्शन विख्यात चित्रकार निकोलस रोरिक के माध्यम से करेगा। रूसी कलाकार रोरिक का 1874 में जन्म हुआ था। इस वर्ष उनकी 150वीं जयंती है।

रोरिक आर्ट गैलरी कुल्लू जिला के नग्गर में है। 1917 की रूस क्रांति के बाद रशियन चित्रकार रोरिक हिमाचल आए थे। नग्गर में रोरिक ने रहकर चित्रकला में देश-विदेश में नाम कमाया था। इन चित्रकलाओं की झांकी को हिमाचल प्रदेश सरकार गणतंत्र दिवस की परेड के माध्यम से देश-प्रदेश में दर्शाएगी।

विकासात्मक परियोजनाएं भी दिखाई जाएंगी इसके अलावा हिमाचल में बन रहे फोरलेन के मॉडल के माध्यम से विकासात्मक परियोजनाएं भी दिखाई जाएंगी। शुक्रवार को नई दिल्ली में हुई बैठक में भारत सरकार ने दोनों मॉडल में प्रदेश के अफसरों को कुछ और सुधार करने के सुझाव दिए हैं। इसी माह इसको लेकर एक और बैठक दिल्ली में होगी। नग्गर में रोरिक के स्टूडियो, उनकी चित्रकला सहित जीवन यात्रा को दर्शाने के लिए इन दिनों मॉडल तैयार किए जा रहे हैं। भाषा एवं संस्कृति विभाग के अधिकारियों ने बताया कि रोरिक का प्रदेश से जुड़ाव, यहां की संस्कृति को किस प्रकार से उन्होंने सहेजा, किस प्रकार स्वरूप एवं रंगों के द्वारा जीवन को प्रदर्शित किया, यह सब मॉडल के माध्यम से दिखाया जाएगा। रोरिक को एक चित्रकार, पुरातत्ववेत्ता, नृविज्ञानी, अधिवक्ता, भूगोलवेत्ता, कवि, इतिहासकार, दार्शनिक, वैज्ञानिक, पर्यटक, शांति के सेनानी के तौर पर भी जाना जाता है। रूस के इतिहास में उनका सम्मानजनक स्थान है।◆◆◆

निकोलस के बेटे स्वेतोस्लाव ने 1962 में की थी आर्ट गैलरी स्थापित

नग्गर में निकोलस रोरिक आर्ट गैलरी की स्थापना 1962 में निकोलस रोरिक के बेटे स्वेतोस्लाव रोरिक ने की थी। जिस भवन में अब गैलरी है, वह कभी निकोलस रोरिक का निवास हुआ करता था। हिमाचल प्रदेश सरकार और रूसी सरकार ने इस आर्ट गैलरी को रोरिक हेरिटेज संग्रहालय के रूप में चलाने के लिए एक ट्रस्ट बनाया है। रूस और भारत की मित्रता का यह एक बड़ा उदाहरण भी है। गणतंत्र दिवस पर इस बार स्वर्णिम भारत विरासत और विकास थीम से जुड़े मॉडल बनाए जा रहे हैं। इसके चलते ही 26 जनवरी की झांकी के लिए निकोलस रोरिक पर आधारित मॉडल बनाने का फैसला लिया गया है।

बीते साल बदले थे झांकियों के चयन के नियम

गणतंत्र दिवस 2024 के लिए राज्यों की झांकियां चयनित करने के लिए केंद्र सरकार ने नियम बदले थे। कर्तव्य पथ पर झांकी निकालने के लिए अब हर राज्य को मौका देने का फैसला हुआ है। वर्ष 2024 से 2026 तक एक बार झांकी निकालने के लिए सभी राज्यों से प्राथमिकताएं मांगी गई थीं। इसके लिए देश के सभी राज्यों के केंद्र सरकार ने ग्रुप बनाए हैं। उत्तर भारत के सात राज्यों में हिमाचल को शामिल किया गया है। हिमाचल ने वर्ष 2025 के गणतंत्र दिवस पर झांकी निकालने की हामी भरी थी। इसी कड़ी में अब सरकार अपना मॉडल तैयार कर रही है। यानि इस बार गणतंत्र दिवस में हिमाचल की झांकी भी प्रदेश का गौरव बढ़ाएगी।

हिमाचल के लाल का अरुणाचल में ड्यूटी के दौरान बलिदान

वीर जवान अक्षय कुमार की शादी के दो महीने बाद मिला दु:खद समाचार

हिमाचल प्रदेश का एक और लाल देश की रक्षा करते हुए शहीद हो गया। धर्मशाला के सिद्धबाड़ी की बागनी पंचायत के 29 वर्षीय जवान अक्षय कुमार ने अरुणाचल प्रदेश में ड्यूटी के दौरान अपनी जान देश के लिए न्यौछावर कर दी। अक्षय कुमार 19 डोगरा बटालियन में तैनात थे और उनकी शहादत की खबर गांव में पहुंचते ही पूरे इलाके में शोक की लहर दौड़ गई है। अक्षय कुमार ने 2015 में महज 19 साल की उम्र में भारतीय सेना की सेवा शुरू की थी। उनके पिता संसार चंद ने बताया कि बचपन से ही अक्षय का सपना देश की सेवा करना था। उनका सपना पूरा तो हुआ, लेकिन यह बलिदान परिवार और गांव के लिए बड़ा सदमा है।

पिता संसार चंद ने बताया कि अक्षय की दो महीने पहले ही शादी हुई थी। उन्होंने भारी मन से कहा कि क्या पता था कि इतनी खुशी के बाद इतना बड़ा गम हमारा इंतजार कर रहा है। शादी के बाद अक्षय अपनी पत्नी के साथ नए जीवन की शुरूआत करने की तैयारी की ही थी, लेकिन किस्मत ने कुछ और ही तय कर रखा था।

अक्षय कुमार के शहीद होने की खबर जैसे ही उनके गांव पहुंची तो पूरा गांव गमगीन हो गया। हर कोई उनकी शहादत पर गर्व तो कर रहा है लेकिन उनकी कमी से सबकी आंखें नम हैं। गांव वाले शहीद को अंतिम विदाई देने की तैयारी कर रहे हैं। अक्षय कुमार के पार्थिव शरीर को पूरे सैन्य सम्मान के साथ उनके पैतृक गांव बागनी लाया गया। यहां उनके अंतिम संस्कार में हजारों लोगों ने शामिल होकर अपने इस वीर सपूत को अंतिम विदाई दी। ◆◆◆

स्वास्थ्य सेवा यात्रा का आयोजन

'महर्षि मनु स्वास्थ्य सेवा यात्रा'

हिमाचल प्रदेश के एनएमओ परिवार द्वारा ऐतिहासिक 'महर्षि मनु स्वास्थ्य सेवा यात्रा' का आयोजन किया गया। इस यात्रा के तहत तीन विभिन्न जिलों में 3 मल्टी स्पेशियलिटी स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन किया गया, जिसमें एकल आरोग्य योजना और एकल परिवार की मदद ली गई। मनु स्वास्थ्य केंद्र, मनाली के तहत NMO-SLBSMC-मंडी यूनिट द्वारा आयोजित इस शिविर में कुल 9 डॉक्टरों ने अपनी सेवाएं दीं। इस शिविर में 298 मरीजों का इलाज किया गया।

इसी तरह मल्टी स्पेशियलिटी स्वास्थ्य शिविर, कारलोटी के तहत नमो टीम एम्स बिलासपुर द्वारा आयोजित इस शिविर में 15 डॉक्टरों ने भाग लिया। यहां कुल 248 मरीजों का इलाज किया गया। मल्टी स्पेशियलिटी शिविर, चियोग में एनएमओ आईजीएमसी शिमला यूनिट द्वारा आयोजित इस शिविर में 12 डॉक्टरों ने अपनी सेवाएं दीं और 235 मरीजों का इलाज किया गया।

सभी शिविरों में जरूरतमंद मरीजों को मुफ्त दवाइयां भी वितरित की गईं। शिविरों में इलाज के लिए पहुंचे लोगों ने इस पुनीत कार्य को लेकर एनएमओ परिवार हिमाचल का आभार व्यक्त किया, विशेष रूप से डॉ. मनीष पांडे जी को शिविरों के आयोजन के लिए धन्यवाद दिया गया। साथ ही डॉ. वरुण जी, केंद्रीय टोली के अध्यक्ष श्री सीबी त्रिपाठी, महासचिव डॉ. अश्वनी टंडन और सभी एकल कार्यकर्ताओं के प्रति भी विशेष आभार व्यक्त किया गया। यह पहल हिमाचल प्रदेश में एनएमओ परिवार की सामाजिक जिम्मेदारी और स्वास्थ्य सेवाओं के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का एक शानदार उदाहरण है।◆◆◆

कांगड़ा जनपद में पारंपरिक त्यौहार

लोहड़ी-माघी

रमेश चन्द्र मस्ताना

भारतवर्ष की संस्कृति की विविधता में दक्षिणायन की समाप्ति और उत्तरायण पक्ष के प्रारम्भ होने पर लोहड़ी एवं माघी का त्योहार शक संवत् के देसी महीनों के अनुसार पौष मास का प्रारम्भ लगभग पन्द्रह दिसम्बर और माघ महीने का प्रारम्भ चौदह जनवरी से होता है। पौष मास को लोक-वाणी में परथानी महीना एवं लुकड़ियां वाला महीना भी बोला जाता है। इसी महीने गावों की छोटी-बड़ी लड़कियां घर-घर जाकर लुकड़ियां लोक-गीत गाती हैं और सभी उन्हें गेहूं-चावल अथवा रुपए-पैसे भेंट स्वरूप प्रदान कर विदा करते हैं। लुकड़ी गायन वास्तव में लोहड़ी के त्योहार के मंगल गीत व शुभकामना सन्देश कहे जा सकते हैं। लुकड़ियां गाने का यह क्रम पौष मास के मासान्त अथवा उस दिन रात्रि के समय मनाए जाने वाले लोहड़ी के त्योहार तक चलता है। पूरा महीना भर लुकड़ियां, मासान्त की रात्रि को लोहड़ी और माघ मास की संक्रांति को प्रात: काल माघी-खिचड़ी का त्योहार बड़े हर्षोल्लास के साथ सभी घरों में मनाया जाता है। पौष मास का मासान्त जहां दक्षिणायन पक्ष का आखिरी दिन होता है, वहीं माघ मास की संक्रांति का दिन उत्तरायण पक्ष के प्रारम्भ का दिन होता है। इसी दिन सूर्य देव मकर राशि में प्रवेश करते हैं, जिसके कारण दिनों का बढ़ना व रातों का घटना तो शुरू होता ही है, सूर्य की तपन शुरू होने के कारण ठंड का प्रकोप भी समाप्त होना प्रारम्भ हो जाता है। लोक-वाणी में इससे संबंधित यह तथ्य बहुत सटीक एवं सार्थक है कि 'आई लोहड़ी तां मुक्का स्याल़ कोहढ़ी' अर्थात् लोहड़ी के आते ही सर्दी की भयंकर ऋतु के प्रकोप का समापन हो जाता है। लोहड़ी एवं माघी के दिन के सन्दर्भ में यह भी मान्यता है कि इन दोनों दिनों तक सूर्य देव बकरे के बराबर छलांग आसमान में लगा चुके होते हैं और दिन बढ़ते हुए व सूरज की धूप में तपश महसूस होनी प्रारम्भ हो जाती है। इसी कारण प्रकृति के रंग भी निखरने लगते हैं और खेतों में फसल भी लहलहाने लगती है, इसलिए इन दोनों त्योहारों को हर्षोल्लास के साथ-साथ ऋतुओं के परिवर्तन का त्योहार भी माना जाता है।

लुकड़ी लोक-गीतों में तिल-चौल़ी नामक लुकड़ी बहुत ही रसीला एवं भावात्मक माना जाता है। इसमें घर की पुत्रवधू, उसके छोटे-नन्हे बालक और उसके सुहाग के प्रति मंगल कामनाएँ व्यक्त की जाती हैं:

नीं तिल-चौल़िए, तिल-चौल़िए, कौंण बेलां होइयां ।
तिल-चौल़िए, तिल-चौल़िए, संझकी बेलां होइयां ।
नीं तिल-चौल़िए, तिल-चौल़िए,
कौंण लगी रसोइया।
तिल-चौल़िए, तिल-चौल़िए, भाबो लगी रसोइया।
नीं तिल-चौल़िए, तिल-चौल़िए, भाबो दैं मूंहडें गीगा।
तिल-चौल़िए, तिल-चौल़िए,
गीगे दैंपैरां कड़ियां।
नीं तिल-चौल़िए, तिल-चौल़िए, कुन्हीं सुन्यारें घढ़ियां।
तिल-चौल़िए, तिल-चौल़िए,
घढ़ने आल़ा हीरा। नीं तिल-चौल़िए, तिल-चौल़िए,
जुग-जुग जीए बीरा - - - - - - ॥

पौष मास के अन्तिम दिनों में जब लोहड़ी का त्योहार नजदीक आ जाता है तो लड़कियां एक विशेष लुकडी के माध्यम से त्योहार के आने और शुभकामनाओं के सन्देश कुछ इस प्रकार देती हैं -

लोहड़ी आई, भैंणों लोहड़ी आई।
केह् लेई आई भैंणों, केह् लेई आई।
हंडिया साग भैंणों, हंडिया साग।
सस्सू-नूंहां भाग भैंणों, सस्सू-नूंहां भाग।
उखल़िया घांणी भैंणों, उखल़िया घांणी ।
भाबो साहडी रांणी भैंणों, भाबो साहडी रांणी।

पौष मास के अन्तिम दिनों में ही सभी घरों में लोहड़ी के लिए पूरे बेहड़े की औरतें एक स्थान पर इकट्ठी, पांच-सात दिनों तक भिगोए हुए धानों को किसी टूटे हुए घड़े के ठीकरे में भूनकर, उन्हें गर्मागर्म ओखली में मूसल के साथ कूटकर चिड़वे/चिप्पां अपने आप ही

बनाने की परंपरा रही है। इसके अतिरिक्त गुड़, तिल, सूखे मेवे आदि चिड़वों के लिए और खिचड़ी के लिए चावल, माह, रौंगी के अतिरिक्त मक्खन इकट्ठा करके घी बनाना, दहीं का बन्दोबस्त करने की प्रक्रियाएं जोरों-शोरों से शुरू हो जाती हैं। लोहड़ी की शाम को लोहड़ी होमने की तैयारी सभी घरों में शुरू हो जाती है। चुल्हे-चौंके व आंगन में गोबर का लेपन किया जाता है। शाम तक तिल, चिड़वे जिसमें गुड़-गचक-रेवड़ियां व मूंगफली के साथ-साथ सूखे मेवे मिलाए हुए होते हैं, एक परात में रख लिए जाते हैं। आग में होमने के लिए इन में से थोड़े-से अलग निकाल कर उनमें ताजा घी एवं मूली भी मिलाई जाती है। सायंकाल अथवा रात्रि के आगाज़ से पहले ही रसोई में चुल्हे तथा आंगन में किसी अंगीठी में भरपूर आग जलाई जाती है और तिल-चौली सभी के द्वारा अग्निदेव को होमकर, सभी को खाने के लिए बांटी जाती है। यह सारी चीजें जहां सर्दी के मौसम में स्वास्थ्य के लिए वरदान सिद्ध होती हैं, वहीं अग्नि देवता को भी होमकर पूरे परिवार के लिए सुख-समृद्धि की कामना की जाती है। शाम के समय से ही लड़के-युवा विभिन्न प्रकार के हरण-स्वांग बनाकर, समूह रूप में हरण-गीत व घुरुंडू आदि गाने के लिए निकल पड़ते हैं। कोई सींग लगाकर हिरण बनता है तो कोई पराल को लपेटकर रीछ बन जाता है। यह सभी हरण गा-गाकर लोहड़ी मांगते हैं:- हरण मंगे तिल-चौली दे,लाल गुड़े दी रोड़ी दे।

हरणा दे सिंग मोटे थे,लाल सुपारी खोटे थे॥
हरणे लाई सिंगे दी,हंडी भज्जी हिंगे दी।
हरण गेया हेड़िया, टोपा भरेया पेड़िया
टक्कू-म-टक्कू, तिल-चौलयिा दा फक्कू
घुग्घिए घूं-घूं - - - ।

इसी प्रकार के कुछ अन्य हरण-गीतों के साथ-साथ घुरुडूं भी गाए जाते हैं। कुछ स्थानों पर दुल्ला-भट्टी और सुन्दर-मुन्दरिए की गाथा को भी सुनाया जाता है और सभी उन्हें खुशी-खुशी रुपए-पैसे एवं चिड़वे आदि खाने को देते हैं। यदि किसी घर में किसी के द्वारा कुछ देने में देरी कर दी जाती है तो लड़के एकदम दूसरे-तीसरे घर जाने की जल्दी में एक छोटा-सा हरण-गीत कुछ इस प्रकार सुनाते हैं-

पंजीह्-पंजीह् पंजाह्, उपरे ते आई गाअ।
गाई दित्ता दुध्ध, दुध्धे दी बणाई चाअ।
चाअ निकली कौड़ी, देह् माए लोहड़ी ॥

लोहड़ी की खुशियों भरी इस रात के उपरांत दूसरे दिन माघ मास की संक्रांति का दिन आता है, जिसे माग्घी अथवा खिचड़ी के त्योहार के नाम से जाना जाता है। इस दिन प्रात: मुंह-अन्धेरे ही लड़कियां घर-घर आकर राजड़े लोक-गीत सुनाकर सभी को जगाती हैं।

राजड़ेयो-राजड़ेयो, राज दुआरें आए भाइया, राज दुआरें आए।
पैरां लग्गी ठंडड़ी-ठंडड़ी, सिरे दी सलाई भाइया, सिरे दी सलाई।
देयां नीं माए चौल़-मांह्, चौल़-मांह्, कुड़ियां जो सीत भाइया,
कुड़ियां जो सीत।
चिट्टेयां चौल़ां रेह्ड़दिए-रेह्ड़दिए, पुतर तेरे ठौकर भाइया, पुतर तेरे ठौकर।
धीयां तेरियां रांणियां, रांणियां, पुतर तेरे ठौकर भाइया, पुतर तेरे ठौकर।
कोठे पर दमदमां, दमदमां, मैं बुज्झेया कोई चोर भाइया,
मैं बुज्झेया कोई चोर।
चोर नीं पाह्ी, पाह्ी, राज्जे दा भंडारी भाइया, राज्जे दा भंडारी ।
दैंणे आल़े देई देयो, देई देयो, कुड़ियां जो सीत भाइया,
कुड़ियां जो सीत - - - - - ॥

इसी बीच घर की बजुर्ग नहाने-धोने के उपरांत जहां चुल्हे-चौंके को संभाल कर खिचड़ी बनाने की तैयारी करती है, वहीं घर का मुखिया भी अपने-आप व अन्य सभी को नहाने के लिए कहकर पूजा-पाठ व मणस-पूज की तैयारी में लग जाते हैं। घर के एक कमरे के कोने में जितने परिवार के सदस्य होते हैं, उतने ही चावल की छोटी-छोटी ढेरियां लगाकर, उन पर माह के दाने व रुपए-पैसे रखकर, सभी अंजुरी में पानी लेकर पितरों एवं औतरों को स्मरण करते हुए मणस-पूज पूरी करते हैं। इसके साथ ही खिचड़ी बनने पर एक पत्ते पर खिचड़ी रखकर उसे भी पूजा जाता है और फिर उस खिचड़ी को कोई बेटी-बहन या भानजे को खाने के लिए दे दिया जाता है। यदि उस समय इन में से कोई भी उपस्थित न हो तो यह खिचड़ी गऊ-ग्रास के रूप में गाय को खिला दी जाती है। नहाने-धोने, मणस-पूज के उपरांत सभी को देसी घी अथवा ताजे दही के साथ खिचड़ी परोसी जाती है और सभी जी भरकर खिचड़ी खाते हैं।

एक लोक-कथा के अनुसार मकर-संक्रांति के दिन कंस मामा ने कृष्ण को मारने के लिए लोहिता नाम की राक्षसी को भेजा था, जिसे श्रीकृष्ण ने खेल-खेल में ही मार दिया था। इसी दिन को गंगा अवतरण दिवस के रूप में भी जाना जाता है और इसी दिन गंगा भागीरथ जी के पीछे-पीछे कपिल मुनि के आश्रम होती हुई समुद्र तक पहुंची थी। इसी कारण इस दिन गंगा-स्नान का बहुत अधिक महत्व समझा जाता है। इसी दिन सूर्यदेव अपने पुत्र शनिदेव से मिलने उनके घर आते हैं और महाभारत के भीष्मपितामह ने अपनी इच्छा-मृत्यु के वरदान के अनुसार अपने प्राण त्यागने के लिए मकर-संक्रांति का ही पावन दिन चुना था। इस प्रकार से लोहड़ी एवं माघी की खिचड़ी के यह त्योहार श्रद्धा एवं आस्था के साथ-साथ हर्षोल्लास तथा उजाले के प्रतीक रूप में जन-जन के द्वारा बहुत चाव एवं लगाव के साथ मनाए जाते हैं।◆◆◆

प्रयाग का महाकुंभ

वर्तमान में आयोजन की उत्तम व्यवस्था

महाकुंभ मेला भारत की सबसे प्राचीन और पवित्र धार्मिक परंपराओं में से एक है। यह मेला चार पवित्र स्थलों—प्रयागराज (इलाहाबाद), हरिद्वार, उज्जैन और नासिक—में हर 12 वर्षों के अंतराल पर ज्योतिषीय गणनाओं के आधार पर किया जाता है।

महाकुंभ का मूल धार्मिक आधार समुद्र मंथन की कथा से जुड़ा हुआ है, जब देवताओं और असुरों ने मिलकर अमृत के लिए समुद्र मंथन किया, तो अमृत कलश से अमृत की कुछ बूंदें धरती के चार स्थानों—प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में गिरीं। इन्हीं स्थानों पर कुंभ मेले का आयोजन होता है।

प्रयागराज (प्राचीन काल का प्रयाग) इन चारों स्थानों में विशेष महत्व रखता है क्योंकि यहां गंगा, यमुना और पौराणिक सरस्वती नदियों का संगम होता है। इसे 'तीर्थराज' भी कहा जाता है।

महाकुंभ का महत्व

महाकुंभ मेले का महत्व न केवल धार्मिक बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी अत्यधिक है। इस अवसर पर लाखों श्रद्धालु संगम में पवित्र स्नान करते हैं, जिससे वे अपने पापों से मुक्ति और मोक्ष प्राप्ति की कामना करते हैं। यह मेला भारत के धार्मिक संतों, मठाधीशों और अखाड़ों के लिए एक महत्वपूर्ण संगम है, जहां वे अपने अनुयायियों को प्रवचन देते हैं और धर्म का प्रचार-प्रसार करते हैं। महाकुंभ का आयोजन भारतीय सांस्कृतिक विविधता, श्रद्धा और सामूहिकता का प्रतीक है।

प्रयाग का महाकुंभ न केवल धार्मिक आयोजन है, बल्कि यह भारतीय सांस्कृतिक धरोहर का भी प्रतिनिधित्व करता है। वर्तमान समय में, सरकार और प्रशासन इस आयोजन को और अधिक सुव्यवस्थित और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने के प्रयास कर रहे हैं। महाकुंभ मेले ने भारत की आध्यात्मिकता और परंपराओं को सशक्त बनाया है और यह भारतीय संस्कृति का एक अनमोल अंग है।

वर्तमान आयोजन

- 2019 के कुंभ मेले को 'दिव्य कुंभ, भव्य कुंभ' का नाम दिया गया था। 2025 के इस आयोजन में कई नई पहलें और सुधार शामिल किए गए हैं।
- संगम क्षेत्र में बेहतर सड़कें, पुल, टेंट सिटी, स्वच्छता और जल निकासी की व्यवस्था।
- स्वच्छता अभियान के तहत मेले को स्वच्छ और हरा-भरा बनाने पर जोर दिया गया है।
- लाखों लोगों की भीड़ को नियंत्रित करने के लिए पुलिस और सुरक्षा बलों की तैनाती।
- सीसीटीवी कैमरों और ड्रोन के माध्यम से निगरानी।
- आगंतुकों की सुविधा के लिए मोबाइल ऐप और हेल्पलाइन सेवाएं।
- डिजिटल नक्शे और गूगल सेवाओं के माध्यम से यातायात प्रबंधन।
- सांस्कृतिक प्रस्तुतियों, कला प्रदर्शनियों और धार्मिक संगोष्ठियों के आयोजन से विशेष आकर्षण का केंद्र।
- विदेशी पर्यटकों के लिए विशेष गाइड और सुविधाएं।
- इस प्रकार प्रयाग का महाकुंभ धर्म संस्कृति का अद्भुत केंद्र बनेगा। सरकार की सक्रिय एवं सकारात्मक भागीदारी से बेहतर जन सुविधाओं में यह महाकुंभ संपन्न होगा।◆◆◆

राष्ट्र के विकास में सनातन संस्कृति का अवदान

– डॉ सपना चंदेल

सनातन धर्म, संस्कृति एवं भारतीय ज्ञान परंपरा का विश्व के समस्त क्षेत्रों में व्यापक प्रभाव रहा है। अनेक ऐतिहासिक परिवर्तनों के बाबजूद भी वैदिक ज्ञान, सहित्य एवं मौखिक परम्परा में संरक्षित रहा है। इतिहास में इस बात के प्रमाण उपलब्ध हैं कि महाभारत काल पर्यंत भारत का विश्व भर में चक्रवर्ती साम्राज्य स्थापित रहा है। इसके बाद संगठन के अभाव और ज्ञानशीलता में कमी के कारण पराधीनता का दु:ख सहन करना पड़ा। यद्यपि विदेशी आक्रांताओं ने भारत की प्राचीन संस्कृति और सांस्कृतिक धरोहर को नष्ट-भ्रष्ट करने के अनेक प्रयास किये परंतु भारत की संस्कृति की मजबूत जडें सांस्कृतिक वैभव के साक्ष्यों को बचाए रखने में सफल रहीं। विदेशियों के आक्रमणों एवं अत्याचारी शासन के दौरान भारतीय संस्कृति तहन-नहस होने से बची रही, यह भारतीय पारंपरिक अनुष्ठानों का प्रतिफल है। इसी सांस्कृतिक विरासत के अंतर्गत वर्तमान में भी भारतीय सनातन संस्कृति फल-फूल रही है और विश्व बंधुत्व का संदेश प्रदान करते हुए विश्व समुदाय को अपनी ओर आकर्षित करने में सफल हो रही है।

इस संक्रमण काल में जहां विभिन्न मतवादों का कट्टरपंथी चेहरा सामने आ रहा है, और विश्व की विभिन्न सभ्यताओं में अनेक सामाजिक विसंगतियां देखने को मिल रही हैं वहां भारतीय संस्कृति अपने उदात्त चिंतन से विश्व समुदाय को प्रभावित करने में समर्थ हो रही है। भारतीय ज्ञान परंपरा योग आयुर्वेद परिवार व्यवस्था को आज सम्मान की दृष्टि से देखा परखा जाने लगा है। वर्तमान परिदृश्य में राजनैतिक खींचतान में सनातन के विरोधी स्वरों को सनातन के संरक्षकों एवं संत जनों तथा राष्ट्रवादी नेतृत्व ने सकारात्मक प्रत्युत्तर दिया है। उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ सनातन धर्म संस्कृति के आदर्श पुरोधा एवं संत के रूप में लोकप्रिय हो चुके हैं। लोकसभा और विधानसभा के चुनावों में स्टार प्रचारक के तौर पर उनकी काफी मांग रहती है। हरयाणा और महाराष्ट्र के चुनाव में उनके द्वारा दिया गया नारा 'बंटेंगे तो कटेंगे' काफी चर्चित रहा और भाजपा की जीत का भी मुख्य कारक भी बना।

भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने भी चुनाव के दौरान 'एक हैं तो सेफ हैं' का लोकलुभावन नारा दे कर चुनाव को भाजपा की जीत में बदल दिया। विपक्ष का कश्मीर में धारा 370 को दोबारा लागू करने का विधान सभा में पारित प्रस्ताव भी महाराष्ट्र में कोई खास अवसर नहीं दिखा सका। तुम्हारी कई पुश्तें भी धारा 370 को वापस नहीं ला सकती। अब यह इतिहास बन चुका है अमित शाह की यह घोषणा चुनाव में प्रभावी रही। सनातन धर्म के सही स्वरूप की पालना और प्रचार-प्रसार के लिए सनातन बोर्ड का गठन किए जाने की मांग होने लगी है। धार्मिक सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विरासत को बचाने के लिए संत समाज द्वारा पदयात्राएं की जा रही हैं जिनके माध्यम से धर्म जागरण के कार्य को गति मिली है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा अपने संगठन के माध्यम से पंच परिवर्तनों को प्राथमिकता के आधार पर प्रचारित करने के लिए कार्यक्रम आयोजित किया जा रहे हैं इन कार्यक्रमों के अंतर्गत भारत की पारंपरिक संस्कृति सभ्याचार और महापुरुषों के आदर्श जीवन चरित्र को सामने रखते हुए व्यक्ति से समाज और राष्ट्र का निर्माण करने की दिशा में व्यापक गतिविधियां संचालित की जा रही हैं। मथुरा में निदेशक मंडल की बैठक और ग्वालियर में विविध संगठनों के प्रचारकों की बैठकों के द्वारा भी संघ अपने दिए की ओर अग्रसर होने के लिए प्रतिबद्ध है। संघ अपने शताब्दी वर्ष में भी विश्व स्तर पर अपनी योजनाओं को क्रियान्वित करने के लिए संकल्प लेकर नि:स्वार्थ भाव से देश सेवा के विभिन्न प्रकल्पों के माध्यम से भारत को विश्व गुरु बनाने की दिशा में सकारात्मक भूमिका निभाने के लिए भी प्रयासरत है। सनातन संस्कृति को तहस-नहस करने के लिए कांग्रेस की सरकारों द्वारा विगत 70 वर्षों में अनेक षड्यंत्र रचे गए हैं जिनमें मुस्लिम पर्सनल लॉ और वक्फ बोर्ड आदि कानून ऐसे हथकंडे हैं, जो सरकारी संरक्षण में मुस्लिम कट्टरपंथ को बढ़ावा देने वाले साबित हुए हैं।

वर्तमान में हिंदू संस्कृति के सम्मान एवं पुनर्वैश्विक स्तर पर प्रचार-प्रसार के लिए सरकार तथा विभिन्न संगठनों द्वारा सकारात्मक प्रयास किये जा रहे हैं जिनके माध्यम से विश्व के विभिन्न देशों में सनातन धर्म संस्कृति एवं दर्शन का प्रभाव बढ़ता हुआ दिखाई दे रहा है और पाश्चात्य संस्कृति भी सनातन संस्कृति का अनुकरण करने के लिए आगे बढने लगी है। उसके विपरीत कुछ इस्लामी कट्टरपंथी भारत विरोधी विदेशी मदद से भारत में अनेक तरह के षडयंत्र रचाने में लगे हुए हैं। उनकी कट्टरपंथी सोच अब सार्वजनिक होने लगी है और अनेक हिंदूवादी संगठन अब सनातन बोर्ड के गठन के लिए भी मांग उठाने लगे हैं हिंदू धर्म जागरण के लिए संत महात्माओं द्वारा पदयात्राएं की जा रही हैं। हिंदुओं के राजनीतिक संरक्षण के लिए भी आवाज उठने लगी है जिसका सुखद परिणाम हाल ही में संपन्न होने वाले चुनावों में भी देखा जा चुका है। इन परिस्थितियों में इस्लाम के कट्टरपंथी आमने-सामने आकर धमकी देने लगे हैं तो हिंदुत्व के लिए समर्पित संस्थान और कुछ संत महात्मा तथा राष्ट्रवादी व्यक्ति और सामाजिक कार्यकर्ता भी हिंदुत्व के पक्ष में मैदान में आ जाते हैं। अब अन्य की विरुद्ध आवाज बुलंद की जाने लगी है।◆◆◆

संयुक्त परिवार की आदर्श भारतीय परम्परा

कल्पना वर्मा 'बेबी'

एक हैं तो सेफ हैं' यह उक्ति संयुक्त परिवार की प्राचीन परंपरा पर भी खरी उतरती है। प्राचीन भारतीय पारिवारिक व्यवस्था के सुखद और सकारात्मक परिणाम और वर्तमान माइक्रो फैमिली का कॉन्सेप्ट भी हमारे सामने हैं। संयुक्त परिवार व्यवस्था जहां भारतीय संस्कृति का मजबूत आधार है वहीं पाश्चात्य एकल और असंगठित परिवार व्यवस्था का दुष्प्रभाव भारत में माइक्रो फैमिली सिस्टम के विकृत रूप में सामने आने लगा है। संयुक्त परिवार में दादा दादी, माता-पिता, चाचा चाचा, देवर देवरानी, जेठ जेठानी सभी एक छत के नीचे रहते। कोई बाहर कमाने जाता था, कोई खेती-बाड़ी करता था और कोई घर के भीतर रहकर भी अपना पूरा योगदान परिवार के भरण पोषण के लिए देता था। किसी प्रकार का वैर विरोध आपस में देखने को नहीं मिलता था। घर में बड़ों का निर्णय सभी को मान्य होता था। एक के सुख में सब सुख मानते थे और एक के दुखी होने पर सभी उसकी सेवा के लिए तत्पर रहा करते थे। जच्चा बच्चा होने पर परिवार की वृद्ध महिलाएं उसका ध्यान रखती थी तो पुरुष बालकों को अपने जीवन आचरण से सदाचार की शिक्षा प्रदान करते थे। महिलाएं कामकाज के साथ-साथ बालिकाओं को संस्कार और शिक्षा प्रदान करती थीं। इसके विपरीत वर्तमान में पति-पत्नी और एक बच्चा यह परिवार की परिभाषा होने लगी है। जिसमें असुरक्षा अधिक और सुख एवं आनंद बहुत कम रह गया है। घर से बाहर विदेशों और महानगरों में नौकरी करने वाले युवा दंपत्ति के लिए बच्चे पैदा करना और उनकी परवरिश तथा शिक्षा करना एक कठिन कार्य होता जा रहा है, जबकि संयुक्त परिवार व्यवस्था में सब काम मिलजुल कर आपस में प्रेम भाव से निपट लिए जाते थे।

वर्तमान में माइक्रो फैमिली सिस्टम में युवाओं को घर से पलायन करने पर मजबूर कर दिया है। वह समाज और परिवार से अलग हो चुके हैं। आज की पीढ़ी को अच्छे संस्कारों से वंचित किया जा रहा है जिससे भले ही वे पैसा कमाने में समर्थ हो सके हैं परंतु संयुक्त परिवार में रहना, माता-पिता, बड़े बुजुर्गों की सेवा करना, यह बहुत कम होता जा रहा है जिससे समाज में परिवार टूटने लगे हैं। अनेक घरों में बूढ़े बुजुर्ग माता-पिता, दादा दादी, नाना नानी अकेले पड़े हैं। उनकी सुध लेने वाला कोई नहीं है। बच्चे तो हैं लेकिन दूर परदेस में बस गए हैं अपनी पत्नियों और बच्चों के साथ। अब तो गांव की पढ़ी-लिखी महिलाओं को भी अपने बच्चों को इंग्लिश मीडियम स्कूलों में पढ़ाने के लिए शहर में रहने का मौका मिलने लगा है। शहर में कमाया गया पैसा शहर में ही खर्च हो जाता है गांव तक पहुंचता ही नहीं। इसके विपरीत गांव में बना मकान ,खेती बाड़ी सब कुछ नष्ट होने लगा है। कुछ जगह तो ऐसा भी देखा गया है कि अगर दो भाई शहर में अलग-अलग रहते हैं, तो एक के बच्चे को पालने के लिए मां और दूसरे का बच्चा पालने तथा स्कूल से लाने ले जाने के लिए बूढ़ा बाप नौकर की तरह शहर और गांव के बीच में पिस रहे हैं। बच्चों के मोह के कारण उसको घर बार, खेती बाड़ी छोडक़र शहर में रहने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है।

बच्चों के साथ अपनी माया मोह ममता के चलते बूढ़े पति-पत्नी आपस में भी साथ नहीं रह पा रहे हैं। आलीशान मकान खाली पड़े हैं। खेती-बाड़ी को जंगली जानवरों ने तहस-नहस कर दिया है। शासन-प्रशासन तमाशा देख रहा है। समाज उजड़ रहा है। लोगों का जीवन डिपू के राशन पर निर्भर करने लगा है। इस व्यवस्था के लिए हर व्यक्ति, हर परिवार, समाज, सरकार सब कसूरवार हैं। वास्तव में हम लोग अपनी संस्कृति को भला बुरा कह कर छोडक़र पश्चिम की भौतिकवादी संस्कृति को अपनाने में लगे हुए हैं जबकि यूरोप के लोग भारत की परिवार व्यवस्था को आदर्श मानने लगे हैं। भले ही आज देखा देखी में माता-पिता के मरने के बाद भव्य आयोजन, कथाएं, भंडारे किए जाते हैं परंतु जीवित माता-पिता और बुजुर्गों की सेवा करना संभव नहीं हो पा रहा है। इन कमियों को पूरा करने के लिए अब परिवार प्रबोधन और संयुक्त परिवारों को बनाए रखने की बात होने लगी है। इसलिए समाज को बचाए रखने के लिए और परिवारों को मजबूत बनाने के लिए मिलजुल कर रहना जरूरी है ताकि एक दूसरे के साथ अधिक से अधिक समय बिताया जा सके। परिवार में हर दिन माता-पिता का वात्सल्य, उनकी डांट फटकार, उपदेश और वात्सल्य तथा आशीर्वाद का प्रसाद मिलता है। यह हमारी संस्कृति की खूबसूरती है। संयुक्त परिवार प्रथा की एक समृद्ध परंपरा जो मातृ देवो भव, पितृदेवो भव अर्थात् माता और पिता को देवता समान मानकर उनकी सेवा, पूजा अर्चना करने का उपदेश देता है। यही है हमारा असली मदर्स डे। आइए, हर रोज मदर्स डे, फादर्स डे मनाने का संकल्प करें।◆◆◆

हिमाचल की बेटी देवांशी का कमाल

टौर-केले के पत्तों से बनी पत्तलों से तैयार किया प्रोजेक्ट

राष्ट्रीय विज्ञान सम्मेलन के लिए चयन

पर्यावरण संरक्षण और स्वास्थ्य लाभ भी दर्शाए सर्वे प्रोजेक्ट में

नादौन की बेटी विज्ञान सम्मेलन भोपाल में करेंगी प्रतिनिधित्व

हमीरपुर जिले के नादौन क्षेत्र में राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला रैल की कक्षा जमा दो की छात्रा देवांशी की प्रोजेक्ट सर्वे रिपोर्ट राज्य स्तरीय बाल विज्ञान सम्मेलन में दूसरे स्थान पर रही। खास बात यह है कि अब यह प्रोजेक्ट सर्वे रिपोर्ट नेशनल स्तर के लिए चयनित हुई है। उल्लेखनीय है कि यह सम्मेलन 17 से 19 दिसंबर को एनआईटी हमीरपुर में आयोजित हुआ था। देवांशी 31वें राष्ट्रीय बाल विज्ञान सम्मेलन-2023 में प्रस्तुत अपना प्रोजेक्ट तीन से छह जनवरी 2025 को भोपाल के राजेंद्र भवन, मध्य प्रदेश में प्रस्तुत करेंगी।

पत्तों से बनी पत्तलों के लाभ दर्शाए

देवांशी ने अपने प्रोजेक्ट में केले, पलारा, पीपल, कटहल और टौर जैसे पेड़ों के पत्तों से बनी पत्तलों पर भोजन करने के स्वास्थ्य लाभों को उजागर किया है। उनका कहना है कि इन पत्तों पर खाना खाने से भोजन की पौष्टिकता और स्वाद में वृद्धि होती है। केले के पत्ते पर भोजन करना चांदी के बर्तनों जैसा लाभकारी है, जो मस्तिष्क को तेज और शरीर के तापमान को संतुलित रखता है। पलारा के पत्तों पर खाना सोने के बर्तनों के समान लाभ देता है, जिससे इम्युनिटी बढ़ती है और वात, कफ, पित्त संतुलित रहते हैं।

पीपल के पत्तों पर भोजन करने से मलेरिया, खांसी, अस्थमा, सिरदर्द और सर्दी से राहत मिलती है। कटहल के पत्ते एंटीऑक्सीडेंट और कैंसर रोधी गुणों से भरपूर होते हैं, जो समय से पहले उम्र बढ़ने से रोकते हैं। टौर के पत्तों में औषधीय गुण पाए जाते हैं, जो भूख बढ़ाने में सहायक होते हैं।

स्वच्छता और गुणवत्ता का महत्व

देवांशी ने अपनी सर्वे रिपोर्ट में बताया कि पत्तों का चयन करते समय उनकी स्वच्छता और गुणवत्ता पर ध्यान देना चाहिए। जंगलों और सड़कों से दूर के पेड़ों के पत्तों का उपयोग करना चाहिए। संक्रमित या मिट्टी से भरे पत्तों से बीमारी फैलने का खतरा हो सकता है। हरे पत्तों का चयन करना चाहिए क्योंकि उनमें पोषक तत्व अधिक होते हैं। उन्होंने सुझाव दिया कि पत्तलों को सिलाई मशीन या विशेष मशीनों की मदद से तैयार किया जा सकता है।

पर्यावरण संरक्षण में योगदान

देवांशी के प्रोजेक्ट में यह भी बताया गया है कि पत्तों से बनी पत्तलें पर्यावरण के अनुकूल होती हैं और प्रदूषण को रोकने में सहायक हैं। इनके उपयोग को बढ़ावा देने और जागरूकता अभियान चलाने की आवश्यकता है। स्कूल की प्रवक्ता मीना शर्मा और पर्यवेक्षक राजेश गौतम ने देवांशी की सफलता पर खुशी जाहिर की। उनका कहना कि यह देवांशी का तीसरा प्रोजेक्ट है, जो नेशनल स्तर पर चयनित हुआ है। राज्य स्तर पर उनके 15 प्रोजेक्ट चयनित हो चुके हैं। देवांशी की उपलब्धि से स्कूल और प्रदेश का नाम रोशन हुआ है।◆◆◆

खरमास

में न करें मांगलिक कार्य

खरमास की अवधि सनातन धर्म में अत्यधिक महत्वपूर्ण मानी जाती है। यह अवधि वर्ष में दो बार आती है और हर बार यह लगभग 30 दिनों की होती है। देखा जाए तो इनमें से एक अवधि प्राय: मार्गशीर्ष एवं पौष महीने के संधिकाल में आती है, जब खरमास का जन्म होता है। इस बार 15 दिसंबर रविवार को खरमास आरंभ हो गया है, जो 14 जनवरी मंगलवार तक रहेगा। हमारे धार्मिक ग्रंथों में वर्णन है कि खरमास के दौरान अंशु तथा भग नामक दो आदित्य, कश्यप और क्रतु नाम के दो ऋषि, महापद्म एवं ककोंटक नाम के दो नाग, चित्रांगद और अर्णायु नामक दो गंधर्व, सहा तथा सहस्या नाम की दो अप्सराएं, तार्क्ष्य एवं अरिष्टनेमि नाम के दो यक्ष और आप तथा वात नाम के दो राक्षस सूर्यदेव के रथ के साथ-साथ चलते हैं। खरमास की अवधि में पूजा-पाठ करें, परंतु मांगलिक कार्य न करें।

-चेतनादित्य आलोक, रांची

विश्व शतरंज के शाह

सबसे कम उम्र में विश्व चैंपियन बने डी गुकेश

चेन्नई में नवंबर 2013 में हुई विश्व शतरंज चैंपियन में 64 खानों के दिग्गज खिलाड़ी अपनी बादशाहत साबित करने के लिए जुटे थे। 19 दिन चले इस टूर्नामेंट को देखने के लिए कई शतरंज प्रेमी भी पहुंचे। इनमें दुबला पतला एक 7 साल का बच्चा भी था जिसने तत्कालीन चैंपियन विश्वनाथन आनंद और मैग्नस कार्लसन को खिताब के लिए जूझते देखा। इस टूर्नामेंट में कार्लसन की जीत बच्चों के दिलो दिमाग में इस तरह घर कर गई कि उसने तय कर लिया कि एक दिन वह भी शतरंज का सरताज बनेगा। पूरे जोश और जज्बे के साथ एक दशक तक तैयारी में जुटा रहने वाला वह बच्चा कोई और नहीं बल्कि हाल ही में सिंगापुर में विश्व चैंपियन का खिताब जीतने वाले 18 वर्ष के डोम्माराजू गुकेश यानी डी गुकेश हैं। गुकेश विश्व चैंपियन बनने वाले दुनिया के सबसे कम उम्र के पहले खिलाड़ी बन गए हैं। यही नहीं वह नौ साल में एशिया चैंपियन भी रह चुके हैं।

अब तक के सारे रिकॉर्ड ध्वस्त

डोम्माराजू गुकेश 12 वर्ष 7 माह 17 दिन की उम्र में ग्रैंड मास्टर बने। अप्रैल 2024 में कनाडा के टोरंटो में हुए फिडे कैंडिडेट शतरंज का खिताब जीतकर गुकेश ने रूस के गैरी कास्प्रोव का 40 वर्ष पहले बनाया रिकार्ड ध्वस्त कर दिया। कास्परोव ने फिडे कैंडिडेट खिताब 20 वर्ष की उम्र में जीता था, जबकि मुकेश ने महेश 17 वर्ष की उम्र में ही यह उपलब्धि हासिल कर ली। वहीं अब वह सबसे कम उम्र में विश्व चैंपियन बनने वाले पहले खिलाड़ी बन गए हैं। कास्परोव 1985 में 22 साल की उम्र में जबकि गुकेश 18 साल की उम्र में ही विश्व चैंपियन बन गए। विश्वनाथन आनंद के बाद भारत के लिए विश्व चैंपियन जीतने वाले गुकेश दूसरे खिलाड़ी हैं।◆◆◆

विदेशी से ज्यादा ताकतवर किन्नौर का बादाम

किन्नौर का बादाम बाजार में विदेशी बादाम पर भारी पड़ रहा है। यह बादाम शिमला में कैलिफोर्निया से आने वाले बादाम से ज्यादा दामों पर बिक रहा है। किन्नौर का बादाम आकार में बड़ा और खाने में भी स्वादिष्ट होता है।

किन्नौर के कल्पा, सांगला और पूह तहसील की पहाड़ियों में कीटनाशकों को शामिल किए बिना जैविक रूप से बादाम का उत्पादन होता है। इसके चलते इसे अत्यधिक पौष्टिक माना जाता है, वहीं इसके दाम भी ज्यादा मिल रहे हैं। कैलिफोर्निया का बादाम 600 से 1200 रूपए प्रतिकिलो तक बिक रहा है, वहीं किन्नौर का बादाम 1 हजार से 2 हजार रूपए प्रतिकिलो तक है।◆◆◆

एक बीघा जमीन में हींग उगाकर कमा सकते हैं साढ़े दस लाख

शीत मरूस्थलीय क्षेत्र किन्नौर और लाहौल-स्पीति की मिट्टी तथा जलवायु हींग की खेती के लिए उपयुक्त हैं। एक बीघा जमीन पर हींग की खेती से 10.5 लाख रुपए की कमाई की जा सकती है। यह जानकारी हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान पंथाघाटी में औषधीय पौधों की खेती को बढ़ावा देने और किसानों को जागरूक करने के लिए आयोजित कार्यशाला में दी। कार्यशाला में अधिकारियों ने बताया कि एक बीघा भूमि में हींग के 833 पौधे लगाए जा सकते हैं। इससे प्रति पौधा 30-35 ग्राम हींग का उत्पादन होगा। शीत मरूस्थलीय क्षेत्र किन्नौर और लाहौल-स्पीति हींग की खेती के लिए बेहद उपयुक्त हैं। हींग का बाजार में भाव 40,000 से 45,000 रुपए प्रति किलोग्राम है तथा किसान एक बीघा जमीन से करी 10.5 लाख रुपए की कमाई कर सकते हैं। भारत में 1145 टन हींग अफगानिस्तान और ईरान से आयात किया जाता है।◆◆◆

समाज ने खोया महान प्रेरणास्रोत और मार्गदर्शक

हिमाचल के पूर्व प्रांत संघचालक रहे पंडित जगन्नाथ शर्मा ने देहदान करके पूरी की सांसारिक यात्रा

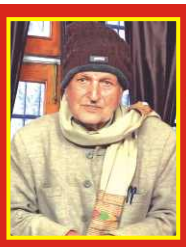

हिमाचल प्रदेश के पूर्व प्रांत संघचालक और समाजसेवा के अद्वितीय प्रतीक पंडित जगन्नाथ शर्मा जी ने अपनी सांसारिक यात्रा पूरी कर ली। उनका निधन 18 दिसंबर को प्रात: 2:30 बजे हुआ। उनके जाने से न केवल हिमाचल बल्कि पूरे समाज ने एक महान प्रेरणास्त्रोत और मार्गदर्शक को खो दिया है।

पंडित जग्गनाथ जी के निधन के साथ ही उनके एक और महान कार्य का उदाहरण सामने आया। उन्होंने अपनी देह एम्स, बिलासपुर को अनुसंधान और चिकित्सा शिक्षा के लिए दान कर दी थी। उनके निधन के बाद भुंतर में आवश्यक औपचारिकताएं पूरी करने के बाद उनके पार्थिव शरीर को एम्स बिलासपुर को सौंपा गया। उनका देहदान का यह कदम समाज के प्रति समर्पण और परोपकार की भावना का प्रतीक है।

आपका जन्म 27 जून 1927 को हिमाचल प्रदेश के ज़िला बिलासपुर के गाँव अमरपुर में हुआ। आपके पिता जी का नाम पंडित जयराम और माता जी का नाम श्रीमती बिन्द्रावती है। आप माता पिता की इकलौती सन्तान रहे। 23 वर्ष की आयु में आपका विवाह हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा सर बटलर हाई स्कूल शिमला वर्तमान में केन्द्रीय विद्यालय से हुई। इसके पश्चात् जॉर्ज विजय हाई स्कूल बिलासपुर से मेट्रिक की परीक्षा 1944 में उतीर्ण की। वर्ष 1946 में डीएवी कॉलेज लाहौर से फैकल्टी ऑफ़ साइंस की परीक्षा पास की। आपने फोर्मन कॉलेज लाहौर में भी अध्ययन किया। आप संघ के सम्पर्क में वर्ष 1941 में ही आ गए थे। संघ प्रवेश शाखा भून्तर में हुआ था, उन दिनों श्री सीताराम जी कुल्लू के प्रचारक थे, वे ज़िला कुल्लू के गाँव निरमंड से थे। भारत विभाजन के आप प्रत्यक्ष गवाह रहे हैं। उन दिनों आप लाहौर में ही पढ़ते थे। संघ द्वारा गठित 'पंजाब रिलीफ कमेटी' में स्वयंसेवकों के साथ मिलकर कार्य किया। यह कमेटी संघ प्रचारक हकुमत राय की देख रेख में कार्य कर रही थी। हिन्दुओं को सकुशल भारत भेजने का कार्य लगभग एक मास तक कमेटी के माध्यम से चला।

आपने संघ शिक्षा वर्ग -प्रथम वर्ष परागपुर से किया। वर्ष 1958 में गुरदासपुर ज़िला के संघचालक बने। वर्ष 1960 में अमृतसर विभाग के संघचालक का दायित्व ग्रहण किया। संघ में विभिन्न दायित्वों का निर्वहन करते हुए आप हिमगिरी प्रान्त के संघचालक भी रहे। इसके पश्चात् वर्ष 2000 में हिमाचल प्रान्त के प्रथम संघचालक बने और दायित्व का निर्वहन आपने वर्ष 2008 तक किया। संघ कार्य के दिनों में आपके द्वितीय सरसंघचालक प.पू. गुरु जी, प. पू. बाला साहब देवरस जी, प.पू. रज्जू भैया जी और प0पू0 सुदर्शन जी से घनिष्ठ सम्पर्क रहे हैं। दायित्व मुक्त होने के बाद भी आप संघ कार्य में सक्रिय रहे। 10 जुलाई 2023 को आपने एम्स बिलासपुर में स्वयं जाकर अपना देहदान किया और अपनी सांसारिक यात्रा संपूर्ण कर समाज के प्रति अपना समर्पण और परोपकार की भावना दिखाई है। उनके जाने से हुई यह क्षति अपूरणीय है। उनके विचार और कार्य सदैव प्रेरणा देते रहेंगे। स्वयंसेवक संघ परिवार और समाज के लिए यह समय अत्यंत कठिन है। हम उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करते हैं और उनके परिवार के प्रति गहरी संवेदनाएं व्यक्त करते हैं।◆◆◆

पंडित जग्गनाथ जी को भावभीनी श्रद्धांजलि

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, हिमाचल प्रान्त के प्रथम संघचालक स्व. पंडित जगन्नाथ शर्मा को उनके निवास स्थान सैनिक चौक भूंतर कुल्लू में 25 दिसम्बर को संघ और समाज के विभिन्न संगठनों के कार्यकर्ताओं ने श्रद्धांजलि अर्पित की। श्रद्धांजलि सभा में संघ के उत्तरक्षेत्र कार्यकारिणी सदस्य श्री रामेश्वर जी ने कहा कि पंडित जी का जीवन सब के लिए प्रेरणा देने वाला है। लम्बी आयु जी लेने के साथ-साथ उन्होंने जीवन को कैसे जिया इसको समझने की आवश्यकता है। उनका जीवन सफल तो था ही, साथ में समाज और संगठन के लिए भी एक दिशा देने वाला रहा है। वे सबको संभालने वाले थे। पंडित जगन्नाथ शर्मा जी सर्वगुण सम्पन्न व्यक्ति थे। वे उच्च कोटि के विद्वान् थे। मृत्यु के बाद भी शरीर मानवता के काम आए, इस विचार और भाव से उन्होंने देहदान किया। यह कार्य महान पुरुषों का ही हो सकता है। हम भी संकल्प ले, उनके द्वारा दिखाए गए रास्ते पर चलें।

सामाजिक समरसता के आदर्श श्रीबालासाहेब देवरस जी

परम पूज्य श्री मधुकर दत्तात्रेय देवरस जी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तृतीय सरसंघचालक थे। आपका जन्म 11 दिसम्बर 1915 को श्री दत्तात्रेय कृष्णराव देवरस जी और श्रीमती पार्वती बाई जी के परिवार में हुआ था। आपने वर्ष 1938 में नागपुर के मॉरिस कॉलेज से स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के उपरांत कॉलेज आफ लॉ, नागपुर विश्व विद्यालय से एलएलबी की डिग्री प्राप्त की। वर्ष 1925 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना डॉक्टर हेडगेवार जी द्वारा की गई थी एवं आप वर्ष 1927 में अपनी 12 वर्ष की अल्पायु में ही संघ के स्वयंसेवक बन गए थे एवं नागपुर में संघ की एक शाखा में नियमित रूप से जाने लगे तथा इस प्रकार अपना सम्पूर्ण जीवन ही मां भारती की सेवा हेतु संघ को समर्पित कर दिया था। आप अपने बाल्यकाल में कई बार दलित स्वयंसेवकों को अपने घर ले जाते थे और अपनी माता से उनका परिचय कराते हुए उन्हें अपने घर की रसोई में अपने साथ भोजन कराते थे। आपकी माता भी उनके इस कार्य में उनका उत्साह वर्धन करती थीं। कुशाग्र बुद्धि के कारण आपने शाखा की कार्य प्रणाली को बहुत शीघ्रता से आत्मसात् कर लिया था। अल्पायु में ही आप क्रमश: गटनायक, गणशिक्षक, शाखा के मुख्य शिक्षक एवं कार्यवाह आदि के अनुभव प्राप्त करते गए। नागपुर की इतवारी शाखा उन दिनों सबसे कमजोर शाखा मानी जाती थी, किंतु जैसे ही आप उक्त शाखा के कार्यवाह बने, आपने एक वर्ष के अपने कार्यकाल में ही उक्त शाखा को नागपुर की सबसे अग्रणी शाखाओं में शामिल कर लिया था। शाखा में आप स्वयंसेवकों के बीच अनुशासन का पालन बहुत कड़ाई से करवाते थे।

श्री देवरस जी द्वारा वसंत व्याख्यानमाला में मई 1974 में पुणे में दिए गए उद्बोधन में आपने अस्पृश्यता प्रथा की घोर निंदा की थी और संघ के स्वयंसेवकों से इस प्रथा को समाप्त करने की अपील भी की थी। संघ ने हिंदू समाज के साथ मिलकर अनुसूचित जाति के सदस्यों के उत्थान के लिए समर्पित संगठन 'सेवा भारती' के माध्यम से कई कार्य किए। आपने 9 नवम्बर 1985 को अपने एक उदबोधन में कहा था कि संघ का मुख्य उद्देश्य हिंदू एकता है और संगठन का मानना है कि भारत के सभी नागरिकों में हिंदू संस्कृति होनी चाहिए।

श्री देवरस जी ने इस संदर्भ में श्री सावरकर जी की बात को दोहराते हुए कहा था कि हम एक संस्कृति और एक राष्ट्र (हिंदू राष्ट्र) में विश्वास करते हैं लेकिन हिंदू की हमारी परिभाषा किसी विशेष प्रकार के विश्वास तक सीमित नहीं है। हिंदू की हमारी परिभाषा में वे लोग शामिल हैं जो एक संस्कृति में विश्वास करते हैं और इस देश को एक राष्ट्र के रूप में देखते हैं। वर्ष 1973 में श्री देवरस जी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक बने। आपने अपने कार्यकाल के दौरान संघ को समाज के साथ जोड़ने में विशेष रूचि दिखाई थी और इसमें सफलता भी प्राप्त की थी। आपने श्री जयप्रकाश नारायण जी के साथ मिलकर भारत में लगाए गए आपातकाल एवं देश से भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए चलाए गए आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। श्री देवरस जी 17 जून 1996 को इस स्थूल काया का परित्याग कर प्रभु परमात्मा में लीन हो गए थे। आपकी इच्छा अनुसार आपका अंतिम संस्कार रेशमबाग के बजाय नागपुर के सामान्य नागरिकों के श्मशान घाट में किया गया था।◆◆◆

विनम्र श्रद्धांजलि

श्री पर्वत राव जी

दक्षिण मध्य क्षेत्र के पूर्व क्षेत्र संघचालक श्री पर्वत राव जी एक समर्पित और अत्यंत प्रबुद्ध कार्यकर्ता थे जो सबके मार्गदर्शक रहे। उनकी जीवन यात्रा का अंत हो गया। वे सदैव प्रेरणादायी व्यक्तित्व के नाते याद रहेंगे। उनकी स्मृति पर मैं श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ और उनके परिवार के सभी सदस्यों को मेरी संवेदनाएं व्यक्त करता हूँ। ईश्वर दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें।

॥ ॐ शान्तिः ॥

दत्तात्रेय होसबाले, सरकार्यवाह
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

हिमाचल का बेटा आर्यन

यू-टयूब से पहुंचा बॉलीवुड तक

हिमाचल प्रदेश के युवा अब फिल्मी दुनिया में भी अपनी पहचान बना रहे हैं। प्रदेश के कई युवा बड़े-बड़े निर्देशकों की फिल्मों में काम करते हुए नजर आ रहे हैं। अब कांगड़ा जिले के एक छोटे से गांव का बेटा भी फिल्मी दुनिया में कदम रखने जा रहा है।

छोटे से गांव का बेटा करेगा डेब्यू

जिला कांगड़ा के गांव सनोट (देहरा गोपीपुर) के रहने वाले आर्यन राजपूत जल्द ही जी5 पर रिलीज होने वाली वेब सीरीज 'मायरी' में डेब्यू करेंगे। यह वेब सीरीज 6दिसंबर को जी5 पर टेलीकास्ट होगी। आर्यन का बॉलीवुड में पहला कदम इस सीरीज के जरिए हिमाचल प्रदेश के लिए गर्व की बात है।

सीरीज में निभाएंगे नेगेटिव रोल

'मायरी' वेब सीरीज में कुल सात एपिसोड हैं, और इसे निर्देशन किया है सचिन दरकरीर ने, जिन्होंने 'एक थी बेगम' जैसी हिट वेब सीरीज बनाई है। आर्यन इस सीरीज में एक डार्क शेड यानी नेगेटिव किरदार निभा रहे हैं। वे इसमें एक अमीर घर की बिगड़ी हुई औलाद का किरदार निभा रहे हैं, जो एक भयानक अपराध को अंजाम देता है।

हिमाचल के स्टार आर्यन

आर्यन ने लॉकडाउन के दौरान अपना यूट्यूब चैनल शुरू किया था, और आज उनके चौनल के 1,26,000 से ज्यादा सब्सक्राइबर हैं। हिमाचल प्रदेश में वे पहले ही अपने फनी वीडियोज, होरर कहानियों और हिमाचल की संस्कृति व परंपराओं को बढ़ावा देने वाले वीडियो के लिए प्रसिद्ध हैं।

तीन महीने पहले की थी बॉलीवुड में एंट्री

आर्यन ने अब तक 15 से ज्यादा गानों में लीड मॉडल के तौर पर काम किया है और स्पॉटिफाई, ऐमेजॉन जैसे बड़े ब्रांड्स के विज्ञापनों में भी नजर आ चुके हैं। बॉलीवुड में उन्हें सिर्फ तीन महीने ही हुए हैं, लेकिन इस कम समय में ही ओटीटी प्लेटफॉर्म पर डेब्यू करना अपने आप में बड़ी उपलब्धि है। उनकी सीरीज में चयन ऑडिशन के जरिए हुआ था।◆◆◆

हिमाचल की बेटी ने बनाया सॉफ्टवेयर

कुछ सैकेंड में कर लेगा पहचान हस्ताक्षर नकली है या असली

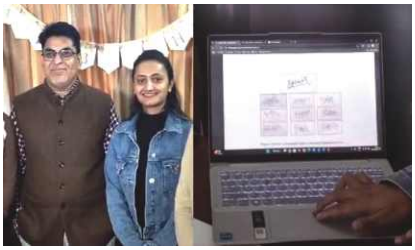

हिमाचल प्रदेश के जिला शिमला के उपमंडल रोहडू के अंतर्गत आते रणसार क्षेत्र के रोहल गांव निवासिनी दामिनी सिवान ने अपनी कड़ी मेहनत और अद्वितीय बुद्धिमत्ता से एक ऐसी उपलब्धि हासिल की है...

हिमाचल प्रदेश के जिला शिमला के उपमंडल रोहडू के अंतर्गत आते रणसार क्षेत्र के रोहल गांव की दामिनी सिवान ने अपनी कड़ी मेहनत और अद्वितीय बुद्धिमत्ता से एक ऐसी उपलब्धि हासिल की है, जो उनके साथ-साथ पूरे क्षेत्र के लिए गर्व का विषय बन चुकी है। चंडीगढ़ के पंजाब विश्वविद्यालय में फोरैंसिक साइंस विभाग में पीएचडी शोधार्थी और फोरैंसिक वैज्ञानिक दामिनी सिवान ने अपने मार्गदर्शक प्रोफैसर केवल कृष्ण के नेतृत्व में और उनकी टीम के साथ मिलकर एक ऐसा सॉफ्टवेयर विकसित किया है, जो असली और नकली हस्ताक्षरों को महज कुछ सैकेंड में पहचानने में सक्षम है। यह सॉफ्टवेयर 90 प्रतिशत तक की सटीकता के साथ हस्ताक्षरों की पहचान कर सकता है, जिससे फोरैंसिक साइंस के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। इस सॉफ्टवेयर की विशेष बात यह है कि इसे भारत सरकार से कॉपीराइट भी प्राप्त हो चुका है, जो इस परियोजना की विश्वसनीयता और उसकी उपयोगिता को और भी बढ़ाता है।

दामिनी सिवान की यह उपलब्धि न केवल विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हो रही है, बल्कि यह पूरे क्षेत्र के युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत भी बन गई है। उनकी कड़ी मेहनत और समर्पण ने यह साबित कर दिया है कि अगर कोई मेहनत और लगन से काम करे वह किसी भी बाधा को पार कर सकता है। रणसार के साथ छौहारा क्षेत्र के लोग दामिनी और उनकी पूरी टीम की इस सफलता पर गर्व महसूस कर रहे हैं।◆◆◆

कनाडा एवं अमेरिका से भारत में बढ़ रही रिवर्स ब्रेन ड्रेन की संभावना

- प्रह्लाद सबनानी

वैश्विक स्तर पर लगातार कुछ इस प्रकार की परिस्थितियां निर्मित होती दिखाई दे रही हैं, जिससे विशेष रूप से कनाडा एवं अमेरिका से भारत की ओर रिवर्स ब्रेन ड्रेन की सम्भावना बढ़ती जा रही है। कनाडा में खालिस्तानियों द्वारा चलाए जा रहे भारत विरोधी आंदोलन के चलते वहां निवासरत भारतीयों एवं मंदिरों पर लगातार हमले हो रहे हैं एवं भारतीयों एवं मंदिरों पर हो रहे इन हमलों पर लगाम लगाने में कनाडा की वर्तमान सरकार असफल सिद्ध हो रही है एवं इन हमलों को, राजनैतिक कारणों के चलते, रोकने की इच्छा शक्ति का अभाव भी दिखाई दे रहा है। इसके चलते भारत एवं कनाडा के राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक रिश्तों पर अत्यधिक विपरीत प्रभाव पड़ता हुआ दिखाई दे रहा है। स्थिति तो यहां तक पहुंच गई है कि भारत ने कनाडा में अपने दूतावास में प्रतिनिधियों की संख्या को कम कर दिया है तथा भारत ने कनाडा को निर्देशित किया था कि वह भी भारत में अपने दूतावास में प्रतिनिधियों की संख्या को कम करे। भारत एवं कनाडा के बीच आज कूटनीतिक रिश्ते आज तक के सबसे निचले स्तर पर आ गए हैं। साथ ही, कनाडा में आज सुरक्षा की दृष्टि से भी स्थितियां तेजी से बदल रही हैं तथा इसका कनाडा के आर्थिक विकास पर भी विपरीत प्रभाव पड़ता हुआ दिखाई दे रहा है। जिसके चलते भारतीय आज कनाडा में अपने आप को असुरक्षित महसूस कर रहे हैं और भारत की ओर रूख कर रहे हैं।

दूसरी ओर, अमेरिका में डोनल्ड ट्रम्प के राष्ट्रपति पद का चुनाव जीतने के पश्चात् वहां पर अवैध रूप से रह रहे अन्य देशों के नागरिकों को अमेरिका से निकाले जाने की सम्भावनाएं बढ़ गई हैं। हालांकि अमेरिका में अवैध रूप से रह रहे भारतीयों की संख्या लगभग नगण्य सी ही है परंतु ट्रम्प प्रशासन द्वारा अब वीजा, एच1बी सहित, जारी करने वाले नियमों को और अधिक कठोर बनाया जा सकता है। अमेरिका में प्रतिवर्ष जारी किए जाने वाले कुल एच1बी वीजा में से 60 प्रतिशत से अधिक वीजा भारतीय मूल के नागरिकों को जारी किए जाते हैं। यदि इस संख्या में भारी कमी दृष्टिगोचर होती है तो अमेरिका में पढ़ रहे भारतीय छात्रों को, उनकी पढ़ाई सम्पन्न करने के पश्चात यदि एच1बी वीजा जारी नहीं होता है तो उन्हें भारत वापिस आने के लिए मजबूर होना पड़ेगा। इस प्रकार अमेरिका से भी भारतीयों का रिवर्स ब्रेन ड्रेन दिखाई पड़ सकता है। भारत आज पूरे विश्व में सबसे अधिक तेज गति से आगे बढ़ती अर्थव्यवस्था बन गया है, अत: भारत में तेज गति से हो रहे आर्थिक विकास के कारण सूचना प्रौद्योगिकी, आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस, उच्च तकनीकी क्षेत्रों, वाहन विनिर्माण उद्योग, फार्मा उद्योग, चिप विनिर्माण उद्योग, स्टार्ट अप, आदि क्षेत्रों में भारी मात्रा में रोजगार के नए अवसर निर्मित हो रहे हैं और भारत को इन क्षेत्रों में उच्च टेलेंट की आवश्यकता भी है। यदि कनाडा एवं अमेरिका से उच्च शिक्षा प्राप्त एवं उक्त क्षेत्रों में प्रशिक्षित इंजीनीयर्स भारत को प्राप्त होते हैं तो यह स्थिति भारत के लिए बहुत फायदेमंद होने जा रही है। उक्त कारणों के अतिरिक्त आज अन्य देशों से भारत की ओर रिवर्स ब्रेन ड्रेन इसलिए भी होता दिखाई दे रहा है क्योंकि, भारत में आज मूलभूत सुविधाएं पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं। किसी भी दृष्टि से भारत का आधारभूत ढांचा आज किसी भी विकसित देश की तुलना में कम नहीं है। साथ ही, भारत में, विकसित देशों की तुलना में, मुद्रा स्फीति की दर कम होने से, सामान्य रहन सहन की लागत तुलनात्मक रूप से भारत में बहुत कम है। अत: भारत में अमेरिका एवं कनाडा की तुलना में शुद्ध बचत दर भी अधिक है। हाल ही के समय में भारत में स्वास्थ्य सेवाओं में भी पर्याप्त सुधार हुआ है। आज बैंगलोर, मुंबई, हैदराबाद जैसे शहरों में बहुत ही कम लागत पर अमेरिकी अस्पतालों की तुलना में (अमेरका की तुलना में तो 1/10 लागत पर) अच्छी स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध हैं। भारत के ग्रामीण इलाकों में तो शुद्ध हवा एवं शुद्ध पानी, जो स्वास्थ्य को ठीक बनाए रखने में सहायक होता है, पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। वरना, महानगरीय इलाकों में तो आज सांस लेना भी बहुत मुश्किल हो रहा है। विभिन्न देशों से उच्च शिक्षा प्राप्त एवं टेलेंटेड भारतीय जो भारत वापिस लौटे हैं, उन्होंने अपने नए प्रारम्भ किए गए स्टार्ट अप के कार्यालय दक्षिण भारत के ग्रामीण इलाकों में स्थापित किए हैं।

भारत में बहुत लम्बे समय से मजबूत लोकतंत्र बना हुआ है एवं केंद्र में एक मजबूत सरकार, उद्योग एवं व्यापार को भारत में प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से उद्योग एवं व्यापार के मित्रवत आर्थिक नीतियों को सफलतापूर्वक लागू कर रही है। ◆◆◆

1 देश चुनाव

डा. कर्म सिंह

भारत विश्व का दूसरा सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है, जहां संवैधानिक प्रावधानों के अंतर्गत 5 वर्ष के बाद लोकसभा और विधानसभा के चुनाव करवाए जाते हैं। अधिकांश राज्यों के चुनाव अलग तिथियां में होते हैं और लोकसभा का चुनाव अलग से होता है। इसके अतिरिक्त जिला परिषद और पंचायत के चुनाव भी विभिन्न प्रदेशों में अलग-अलग तिथियों में करवाए जाते हैं। इस प्रकार भारतवर्ष का अधिकांश समय चुनावों में ही बीत जाता है। जिसमें धन, बल, शासन और जनता का अधिकांश समय चुनाव में ही खर्च होता है। बार-बार चुनाव होने पर आचार संहिता लगाई जाने से विकास के कार्य प्रभावित होते हैं। क्योंकि इस दौरान नई योजनाएं, नए कार्यक्रम रोक दिए जाते हैं। हर एक प्रांत में आए दिन कोई न कोई चुनाव होता रहता है और केंद्र सरकार को इन चुनाव के लिए व्यवस्था करनी होती है। इसलिए एक देश एक चुनाव का विचार सामने आया।

वर्तमान में भारत सरकार के मंत्रिमंडल द्वारा एक देश एक चुनाव को स्वीकृति प्रदान की गई है । इस विषय पर लोकसभा में भी चर्चा हो रही है। आने वाले वर्षों में भारत में चुनाव की दृष्टि से डीलिमिटेशन भी किया जाना है जिससे लोकसभा और विधानसभा की सीटों में वृद्धि होने वाली है। महिलाओं को भी आरक्षण दिए जाने से राजनैतिक परिदृश्य में काफी बदलाव होने की संभावना है। इसलिए चुनाव को लेकर गंभीरता से विचार किया जाना जरूरी है ताकि समय की बचत हो, बार-बार चुनाव न हों, पैसे की फिजूलखर्ची पर रोक लगाई जा सके और जो भी सरकार चुनी जाए वह 5 वर्षों तक अपना कार्यकाल पूरा करके योजनाओं को अमल में लाने के लिए प्रतिबद्ध रहे ताकि विकास के कार्यों को गतिशील किया जा सके।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक देश एक चुनाव इस विषय को सामने लाया है। इस मसले पर चुनाव आयोग, नीति आयोग, विधि आयोग और संविधान समीक्षा आयोग द्वारा विचार कर लिए जाने के बाद विधि आयोग ने देश में एक साथ चुनाव कराये जाने के मुद्दे पर विभिन्न राजनीतिक दलों, क्षेत्रीय पार्टियों और प्रशासनिक अधिकारियों की राय जानने के लिये तीन दिवसीय कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया था। इस कॉन्फ्रेंस में कुछ राजनीतिक दलों ने इस विचार से सहमति जताई, जबकि ज्यादातर राजनीतिक दलों ने इसका विरोध किया।

एक देश एक चुनाव की जरूरत क्यों है? इसकी पृष्ठभूमि क्या है? यह विचारणीय है।

वस्तुत: किसी भी जीवंत लोकतंत्र में चुनाव एक अनिवार्य प्रक्रिया है। स्वस्थ एवं निष्पक्ष चुनाव लोकतंत्र की आधारशिला होते हैं। भारत जैसे विशाल देश में निर्बाध रूप से निष्पक्ष चुनाव कराना हमेशा से एक चुनौती रहा है। हर वर्ष किसी न किसी राज्य में चुनाव होते रहते हैं। चुनावों की इस निरंतरता के कारण देश हमेशा चुनावी मोड़ में रहता है। इससे न केवल प्रशासनिक और नीतिगत निर्णय प्रभावित होते हैं बल्कि देश के खजाने पर भारी बोझ भी पड़ता है। इस सबसे बचने के लिये नीति निर्माताओं ने लोकसभा तथा राज्यों की विधानसभाओं का चुनाव एक साथ कराने का विचार बनाया। इनके अलावा पंचायत और नगरपालिकाओं के चुनाव भी होते हैं किन्तु एक देश एक चुनाव में इन्हें शामिल नहीं किया जाता। एक देश एक चुनाव लोकसभा और राज्यों की विधानसभाओं का चुनाव एक साथ करवाने का प्रमुख विषय है।

एक देश एक चुनाव कोई अनूठा प्रयोग नहीं है, क्योंकि 1952, 1957, 1962, 1967 में ऐसा हो चुका है, जब लोकसभा और राज्यों की विधानसभाओं के चुनाव साथ-साथ करवाए गए थे। यह क्रम तब टूटा जब 1968-69 में कुछ राज्यों की विधानसभाएँ विभिन्न कारणों से समय से पहले भंग कर दी गई। 1971 में लोकसभा चुनाव भी समय से पहले हो गए थे। जाहिर है जब इस प्रकार चुनाव पहले भी करवाए जा चुके हैं तो अब करवाने में क्या समस्या है। एक तरफ जहाँ कुछ जानकारों का

मानना है कि अब देश की जनसंख्या बहुत ज्यादा बढ़ गई है, लिहाजा एक साथ चुनाव करा पाना संभव नहीं है, तो वहीं दूसरी तरफ कुछ विश्लेषक कहते हैं कि अगर देश की जनसंख्या बढ़ी है तो तकनीक और अन्य संसाधनों का भी विकास हुआ है। इसलिए एक देश एक चुनाव की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता।

एक देश एक चुनाव के पक्ष में कहा जाता है कि यह विकासोन्मुखी विचार है। जाहिर है लगातार चुनावों के कारण देश में बार-बार आदर्श आचार संहिता लागू करनी पड़ती है। इसकी वजह से सरकार आवश्यक नीतिगत निर्णय नहीं ले पाती और विभिन्न योजनाओं को लागू करने में भी समस्या आती है। इसके कारण विकास कार्य प्रभावित होते हैं। आदर्श आचार संहिता या मॉडल कोड ऑफ कंडक्ट चुनावों की निष्पक्षता बरकरार रखने के लिये बनाया गया है। इसके तहत निर्वाचन आयोग द्वारा चुनाव अधिसूचना जारी करने के बाद सत्ताधारी दल के द्वारा किसी परियोजना की घोषणा, नई स्कीमों की शुरुआत या वित्तीय मंजूरी और नियुक्ति प्रक्रिया की मनाही रहती है। इसके पीछे निहित उद्देश्य यह है कि सत्ताधारी दल को चुनाव में अतिरिक्त लाभ न मिल सके। इसलिए यदि देश में एक ही बार में लोकसभा और राज्यों की विधानसभाओं का चुनाव कराया जाए तो आदर्श आचार संहिता कुछ ही समय तक लागू रहेगी, और इसके बाद विकास कार्यों को निर्बाध पूरा किया जा सकेगा।

एक देश एक चुनाव के लागू होने पर बार-बार चुनावों में होने वाले भारी खर्च में कमी आएगी। सरकारी खजाने पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ कम होगा। इससे काले धन और भ्रष्टाचार पर रोक लगाने में मदद मिलेगी। यह किसी से छिपा नहीं है कि चुनावों के दौरान राजनीतिक दलों और प्रत्याशियों द्वारा काले धन का खुलकर इस्तेमाल किया जाता है। हालाँकि देश में प्रत्याशियों द्वारा चुनावों में किये जाने वाले खर्च की सीमा निर्धारित की गई है, किन्तु राजनीतिक दलों द्वारा किये जाने वाले खर्च की कोई सीमा निर्धारित नहीं की गई है। एक साथ चुनाव कराये जाने से इस प्रकार की समस्याओं से निजात पाई जा सकती है।

एक साथ चुनाव कराने से सरकारी कर्मचारियों और सुरक्षा बलों को बार-बार चुनावी ड्यूटी पर लगाने की जरूरत नहीं पड़ेगी। इससे उनका समय तो बचेगा ही और वे अपने कर्त्तव्यों का पालन भी सही तरीके से कर पायेंगे। चुनाव कराने के लिये शिक्षकों और सरकारी नौकरी करने वाले कर्मचारियों की सेवाएं ली जाती हैं, जिससे उनका कार्य प्रभावित होता है। इतना ही नहीं, निर्बाध चुनाव कराने के लिये भारी संख्या में पुलिस और सुरक्षा बलों की तैनाती के अलावा बार-बार होने वाले चुनावों से आम जन-जीवन भी प्रभावित होता है।

एक देश एक चुनाव के विरोध में विश्लेषकों का मानना है कि संविधान ने हमें संसदीय मॉडल प्रदान किया है जिसके तहत लोकसभा और विधानसभाएँ पाँच वर्षों के लिये चुनी जाती हैं, लेकिन एक साथ चुनाव कराने के मुद्दे पर हमारा संविधान मौन है। संविधान में कई ऐसे प्रावधान हैं जो इस विचार के बिल्कुल विपरीत दिखाई देते हैं। मसलन अनुच्छेद 2 के तहत संसद द्वारा किसी नये राज्य को भारतीय संघ में शामिल किया जा सकता है और अनुच्छेद 3 के तहत संसद कोई नया राज्य बना सकती है, जहाँ अलग से चुनाव कराने पड़ सकते हैं। इसी प्रकार अनुच्छेद 85(2)(ख) के अनुसार राष्ट्रपति लोकसभा को और अनुच्छेद 174(2)(ख) के अनुसार राज्यपाल विधानसभा को पाँच वर्ष से पहले भी भंग कर सकते हैं। अनुच्छेद 352 के तहत युद्ध, बाह्य आक्रमण या सशस्त्र विद्रोह की स्थिति में राष्ट्रीय आपातकाल लगाकर लोकसभा का कार्यकाल बढ़ाया जा सकता है। इसी तरह अनुच्छेद 356 के तहत राज्यों में राष्ट्रपति शासन लगाया जा सकता है और ऐसी स्थिति में संबंधित राज्य के राजनीतिक समीकरण में अप्रत्याशित उलटफेर होने से वहाँ फिर से चुनाव की संभावना बढ़ जाती है। ये सारी परिस्थितियाँ एक देश एक चुनाव के नितांत विपरीत हैं। यह विचार देश के संघीय ढाँचे के विपरीत होगा और संसदीय लोकतंत्र के लिये घातक कदम होगा। लोकसभा और राज्यों की विधानसभाओं का चुनाव एक साथ करवाने पर कुछ विधानसभाओं के मर्जी के खिलाफ उनके कार्यकाल को बढ़ाया या घटाया जायेगा जिससे राज्यों की स्वायत्तता प्रभावित हो सकती है।

अगर लोकसभा और राज्यों की विधानसभाओं के चुनाव एक साथ करवाए गए तो ज्यादा संभावना है कि राष्ट्रीय मुद्दों के सामने क्षेत्रीय मुद्दे गौण हो जाएँ या इसके विपरीत क्षेत्रीय मुद्दों के सामने राष्ट्रीय मुद्दे अपना अस्तित्व खो दें। उपरोक्त शंकाएं निराधार नहीं तथापि एक देश एक चुनाव की व्यवस्था से देश के समग्र विकास में अप्रत्याशित वृद्धि हो सकती है, इस बात से इन्कार नहीं किया जा जा सकता। चुनावों के इस चक्रव्यूह से देश को निकालने के लिये एक व्यापक चुनाव सुधार अभियान चलाने की आवश्यकता है। इसके तहत जनप्रतिनिधित्व कानून में सुधार, काले धन पर रोक, राजनीति में बढ़ते अपराधीकरण पर रोक, लोगों में राजनीतिक जागरूकता पैदा करना शामिल है जिससे समावेशी लोकतंत्र की स्थापना की जा सके। यदि देश में 'एक देश एक कर' यानी जीएसटी लागू हो सकता है तो एक देश एक चुनाव क्यों नहीं हो सकता ?◆◆◆

वक्फ एक्ट 1954 एक षड्यंत्र

वक्फ क्या है पहले इसे जानते है, इसका अर्थ है खुदा के नाम पर अर्पित वस्तु या संपत्ति।

- योगेश

वर्ष 1954 में जब वक्फ एक्ट आया फिर बाद में इसी से वक्फ बोर्ड का जन्म हुआ। प्रारम्भ में जब इसे बनाया गया तो इसका काम था शिया और सुन्नी समुदायों के मध्य आपसी विवादों को हल करना। इसीलिए आज भी लोगों को यही लगता है कि यह हमारा विषय नहीं है ये शिया और सुन्नी दो मुस्लिम समुदायों का आपसी मामला है। परन्तु वास्तविकता कुछ और है इस विषय को गहराई से समझना प्रत्येक भारतीय के लिए जरूरी है उन्हें यह जानना होगा कि ये उनका विषय है और इसके खिलाफ खड़ा होना होगा। आज वक्फ बोर्ड के पास भारत की कुल 38 लाख एकड़ जमीन का लगभग 30 प्रतिशत 11 लाख एकड़ के करीब जमीन है। जो अपने आप में एक अलग पाकिस्तान से भी अधिक है। वक्फ बोर्ड की कुल संपत्ति की अनुमानित कीमत 2 लाख करोड़ रूपये है। जो भारत में रेलवे तथा रक्षा विभाग के बाद तीसरा अमीर बोर्ड है। प्रश्न का विषय यह है कि इसके पास इतनी संपत्ति और जमीन कहाँ से आई ये जानना जरूरी है।

जब भारत आजाद हुआ था तब ये निश्चित किया गया था कि जो भी मुसलमान भारत से पाकिस्तान जा रहा है उसकी जमीन को पाकिस्तान से विस्थापित होकर आए हिन्दुओं को दिया जाएगा। इस जमीन को सरकार ने अपने नाम करने के लिए Administration of Evaquee Property Act बनाया। फिर इस जमीन को विस्थापित हिन्दुओं के नाम किया जाना था। हिन्दू लोग उस जमीन पर किराया देकर रहने लगे उन्हें आस थी कि एक दिन ये जमीन उनके नाम होगी। परन्तु राजीव गांधी की कांग्रेस सरकाार ने वक्फ एक्ट 1954 को संशोधित करके 1984 में Sec-66H [Himachal Pradesh] जिसके तहत वह सारी जमीन वक्फ बोर्ड के नाम कर दी गई। कांग्रेस सरकार ने वक्फ बोर्ड को इतने अधिकार दे दिए है कि जिनमें आज हिन्दू पिसता जा रहा है।

वक्फ बोर्ड संपत्ति का सर्वे प्रत्येक 10 वर्षों में (Under Sec. 4, 5, 6) करता है, जिस सर्वे का खर्चा भी राज्य सरकार को (Under Sec. 8 वक्फ एक्ट) 1995 के तहत वहन करना पड़ता है।

यदि उस सर्वे में किसी व्यक्ति की संपत्ति जा रही हो तो उस व्यक्ति को सूचना देने का कोई प्रावधान नहीं है। यदि उसे 1 साल के भीतर चलैंज नहीं किया गया तो उस अधिसूचना को मान्य माना जाएगा।

सेक्शन-6 में एक शब्द था Person interested जिसके तहत यदि गैर मुस्लिम की संपत्ति वक्फ में जाती है तो वह अधिसूचना उस पर लागू नहीं होगी। ये फैसला 1979 में सुप्रीम कोर्ट ने दिया था और 2010 में भी इस फैसले को सुप्रीम कोर्ट ने निरस्त किया था। परन्तु कांग्रेस सरकार ने 2013 में सेक्शन 6 के इस शब्द पर्सन इन्फॉरमेशन को बदलकर पर्सन एग्रीव्ड कर दिया। फिर माननीय सुप्रीम कोर्ट ने भी अपने जजमेंट में उस अधिसूचना को अब गैर मुस्लिम पर भी लागू करने को कहा।

आज इस पर विवाद क्यों?

- आज वक्फ अधिनियम के सेक्शन-40 पर बहस छिड़ी है इसके तहत बोर्ड को रिजन् टू बिलीव की शक्ति मिल जाती है यानि यदि वक्फ बोर्ड 10 वर्षों से पहले सर्वे करना चाहे तो उसके लिए सैक्शन-40 सब क्लॉज 1 और 3 का प्रावधान है। इसमें ये है कि वक्फ किसी भी संपत्ति को उसकी संपति घोषित कर सकता है।
- यदि संपत्ति ट्रस्ट सोसाइटी की हो तो उन्हें नोटिस देने की भी कोई जरूरत नहीं जहां आपकी संपति दर्ज है नोटिस वहाँ दिया जाएगा।
- यदि मेरे और वक्फ के बीच किसी तरह का विवाद हो जाता है तो मैं सिविल कोर्ट भी नहीं जा सकता। मुझे वक्फ ट्रिब्यूनल जाना होगा। वहाँ वे ही लोग होंगे जो इस्लामिक कानून जानते होगे। एक प्रकार से हम ये कह सकते है कि इस देश में शरीया कोर्ट बना दिया गया है। इसमें एक बात ध्यान देने योग्य यह है कि ये वक्फ ट्रिब्यूनल पूरी तरह से असंवैधानिक है। अनुच्छेद 323 ए और बी में ये बताया गया है कि कौन-कौन किन विषयों पर केन्द्र या राज्य सरकार प्रशासनिक ट्रिब्यूनल बना सकती है। परन्तु वक्फ बोर्ड उस सूची में आता ही नहीं है।
- इन्हें एक ये विशेषाधिकार भी दिया गया है जो भी व्यक्ति वक्फ में काम करता है उसे सेक्शन 101 के तहत पब्लिक सर्वेंट का दर्जा दिया गया है। यदि कोई उन्हें हाथ भी लगा दे तो वह आईपीसी के तहत ऑफेंस है।

क्या हमने कभी ये सुना कि किसी हिन्दू मन्दिर के पुजारी या किसी शंकराचार्य को पब्लिक सर्वेंट कहा गया हो, नहीं।

आज देश में ऐसे सैंकड़ो विवाद चल रहे है?

ज्ञानवापी परिसर, शाहिद मस्जिद (श्रीकृष्ण जन्मभूमि मथुरा), बैंगलूर ईदगाह मैदान विवाद जहाँ कुछ समय पहले हिन्दू भाइयों को गणपति त्योहार मनाने नहीं दिया गया। 2022 में तमिलनाडु में थिरूचेंदुरई पेरूं गावं को वक्फ होने का दावा किया गया। यदि ऐसा ही रहा तो ये सच में एक दिन भारत को ही वक्फ संपत्ति घोषित कर देंगे। इसलिए आज हमें इसमें संशोधन की आवश्यकता है तथा इसके विषय में जानना अत्यन्त आवश्यक है। प्रत्येक भारतीय को बिल का समर्थन करना होगा।◆◆◆

नए साल में किसानों को बड़ी सौगात

बिना गारंटी के मिलेगा 2 लाख रुपये तक का लोन

नए साल पर भारतीय किसानों के लिए एक बड़ी खुशखबरी आई है। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने किसानों को राहत देते हुए बिना गारंटी के मिलने वाले लोन की सीमा को बढ़ा दिया है। अब किसान बिना किसी जमानत के 2 लाख रुपये तक का लोन ले सकते हैं। पहले यह सीमा 1.60 लाख रुपये थी। इस बदलाव के बाद अब देश के करीब 86 प्रतिशत छोटे और सीमांत किसानों को इस योजना का लाभ होगा।

लोन की सीमा में वृद्धि : आरबीआई ने 1 जनवरी 2025 से किसानों के लिए बिना गारंटी के लोन की सीमा को 1.6 लाख रुपये से बढ़ाकर 2 लाख रुपये कर दिया है। इससे पहले 2010 में यह सीमा 1 लाख रुपये तय की गई थी, जिसे 2019 में बढ़ाकर 1.6 लाख रुपये किया गया था। अब इसे बढ़ाकर 2 लाख रुपये करने का फैसला लिया गया है। यह कदम खेती की बढ़ती लागत और किसानों की वित्तीय जरूरतों को ध्यान में रखते हुए लिया गया है।

आरबीआई का यह कदम देश के किसानों के लिए एक बड़ी राहत लेकर आया है। बिना गारंटी के 2 लाख रुपये तक का लोन छोटे और सीमांत किसानों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाएगा। यह कृषि क्षेत्र में वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने और किसानों को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

बिना गारंटी के लोन का लाभ : बैंकों को निर्देश दिया गया है कि वे प्रत्येक उधारकर्ता को 2 लाख रुपये तक का कृषि और संबद्ध गतिविधियों के लिए लोन बिना किसी जमानत और मार्जिन की जरूरत के प्रदान करें। यह योजना किसानों के लिए विशेष रूप से फायदेमंद होगी, क्योंकि इससे उन्हें खेती की लागत को पूरा करने में आसानी होगी।

छोटे और सीमांत किसानों को अधिक फायदा : कृषि मंत्रालय के अनुसार, इस बदलाव का फायदा छोटे और सीमांत किसानों को सबसे अधिक होगा। देश में करीब 86 प्रतिशत किसान ऐसे हैं जिनके पास सीमित भूमि है। ऐसे किसान अक्सर वित्तीय सहायता के लिए जूझते हैं। यह कदम उन्हें खेती से जुड़ी जरूरतों के लिए आसानी से वित्तीय सहायता प्रदान करेगा।

किसान क्रेडिट कार्ड और ब्याज सहायता योजना का लाभ: सरकार की इस नई पहल से किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी) योजना के तहत लोन लेना और भी आसान हो जाएगा। केसीसी योजना के तहत किसानों को 3 लाख रुपये तक का लोन मात्र 4 फीसदी की ब्याज दर पर मिलता है। बिना गारंटी के लोन की सीमा बढ़ाने का यह निर्णय सरकार की संशोधित ब्याज सहायता योजना के प्रभाव को और मजबूत करेगा।

तत्काल लागू करने के निर्देश: सरकार ने सभी बैंकों को निर्देश दिया है कि वे इस योजना को तुरंत लागू करें और किसानों के बीच इसकी व्यापक जागरूकता फैलाएं। बैंकों को यह सुनिश्चित करने के लिए कहा गया है कि किसानों को इस योजना का लाभ जल्द से जल्द मिल सके।

कृषि क्षेत्र को बड़ी राहत : यह निर्णय खेती की बढ़ती लागत को देखते हुए लिया गया है। पिछले कुछ वर्षों में खाद, बीज और अन्य कृषि इनपुट्स की कीमतों में वृद्धि हुई है, जिससे किसानों पर वित्तीय दबाव बढ़ा है। इस नई पहल से किसानों को अपनी खेती की जरूरतों को पूरा करने में मदद मिलेगी और उनकी आय में सुधार की उम्मीद है।

शुभ परिवर्तन

पर्व यही शुभ परिवर्तन का सबके मन को भाता खूब
मकर संक्रांति पर्व आ गया, सबके मन को खूब भा गया
जागी मन में नयी उमंगें रंग बिरंगी उड़ी पतंगें
धुंध हटेगी सभी जगह से हरी भरी फिर होगी दूब
पर्व यही शुभ परिवर्तन का सबके मन को भाता खूब
नयी फसल पकने का मौसम, ठिठुरन भी होती जाती कम
सूर्य उत्तरायण में आता, जीव जगत सारा हर्षाता
खिल खिल जाते हृदय सभी के मिट जाती है सारी ऊब
पर्व यही शुभ परिवर्तन का सबके मन को भाता खूब
दान पुण्य तीर्थों के दर्शन और नित्य स्नान प्रभु अर्चन
सबके हित की करें कामना, हर्षित मन में यही भावना
शुभ स्मरण पूर्वजों का करते भक्ति भाव में जाते डूब
पर्व यही शुभ परिवर्तन का सबके मन को भाता खूब

– सुरेन्द्रपाल वैद्य, मण्डी (हि.प्र.)

आदमी कितना बदल गया

आदमी कितना एहसान फरामोश हो गया
अपने ही नशे में मदहोश हो गया
मिलते हुए भी ज़िन्दगी में सब कुछ,
दिल से क्यों खानाबदोश हो गया
तिरछी नजरों से ताकता है सब को
सामने से नजर क्यों मिलाता नहीं
दिल में दबाकर रखता है सारी बातें
पूछने पर भी क्यों बताता नहीं
भेद रखता है सभी के बाहर से क्यों बनता है अनजान
घर बनाना अब भूल गया बनाये जा रहा नए नए मकान
करने लगता नेकी की बातें, किसी के साथ जब जाता है शमशान
लौटने पर फिर सब कुछ है भूल जाता
खोल देता है फिर बेईमानी और पैसे की दुकान

रवींद्र कुमार शर्मा, घुमारवीं
जिला बिलासपुर हि प्र

बेटियाँ

बेटियाँ चावल उछाल कर बिना पलटे,
महावर लगे कदमों से विदा हो जाती हैं ।
छोड़ जाती है बुक शेल्फ में,
कवर पर अपना नाम लिखी किताबें ।
दीवार पर टंगी खूबसूरत आइल पेंटिंग
के एक कोने पर लिखा अपना नाम ।
खामोशी से नर्म एहसासों की निशानियां,
छोड़ जाती हैं ...बेटियाँ विदा हो जाती हैं ।
रसोई में नए फैशन की क्राकरी खरीद,
अपने पसंद की सलीके से बैठक सजा,
अलमारियों में आउट डेटेड ड्रेस छोड़,
तमाम नयी खरीदादारी सूटकेस में ले,
मन आँगन की तुलसी में दबा जाती हैं ...
बेटियाँ विदा हो जाती हैं ।
सूने सूने कमरों में उनका स्पर्श,
पूजा घर की रंगोली में उंगलियों की महक,
बिरहन दीवारों पर बचपन की निशानियाँ,
घर आँगन पनीली आँखों में भर,
महावर लगे पैरों से दहलीज़ लांघ जाती है....
बेटियाँ चावल उछाल विदा हो जाती हैं ।
एल्बम में अपनी मुस्कुराती तस्वीरें ,
कुछ धूल लगे मैडल और कप ,
आँगन में गेंदे की क्यारियाँ उसकी निशानी,
गुडियों को पहनाकर एक साड़ी पुरानी,
उदास खिलौने आले में औंधे मुँह लुढ़के,
घर भर में वीरानी घोल जाती हैं ....
बेटियाँ चावल उछाल विदा हो जाती हैं ।
टी वी पर शादी की सी डी देखते देखते,
पापा हट जाते जब जब विदाई आती है ।
सारा बचपन अपने तकिये के अंदर दबा,
जिम्मेदारी की चुनर ओढ़ चली जाती हैं ।
बेटियाँ चावल उछाल बिना पलटे विदा हो जाती हैं ।
बेटियां एक ऐसा पौधा हैं, जो बीस पच्चीस साल का होकर भी
दूसरे आंगन में फिर से जड़े जमा कर
खुशबू, छांव और हरियाली से महका देती है घर आंगन ।

साभार : सोशल मीडिया

सर्दियों में गोंद का सेवन लाभकारी

भारत भूमि को प्रकृति का अनमोल वरदान प्राप्त है यहां असंख्य औषधीय वनस्पतियां-अन्न उत्पन्न होते हैं, जीवन की सुरक्षा के लिए जिनका उपयोग मनुष्यों तथा विभिन्न प्राणियों द्वारा किया जाता है। प्रकृति विभिन्न ऋतु में अनेक तरह की औषधीय वनस्पतियों से संपन्न होती है जिन का उपयोग स्वास्थ्य की रक्षा और जीवन यापन के लिए किया जाता है।

भारत में विभिन्न ऋतुओं के अनुसार खानपान की समृद्ध परंपरा रही है। गर्मियों सर्दियों बरसात आदि के समय क्या खाना चाहिए और क्या नहीं खाया जाना चाहिए इसका भारतीय ज्ञान परंपरा में विशेष महत्व है। भारतीय परिवार एवं समाज व्यवस्था में यह शिक्षा पीढ़ी दर पीढ़ी प्राप्त होती चली आ रही है। इसलिए घरों में अनुभवी माताओं, बुजुर्गों द्वारा छोटे-छोटे रोगों के उपचार खान-पान की व्यवस्था के अनुसार स्वयं ही कर लिए जाते हैं।

आजकल सर्दियों का मौसम है सर्दियों में जहां बर्फीले क्षेत्र में और मैदानी क्षेत्रों में ठंड से बचाव के लिए किस तरह का खानपान रहना चाहिए यह सदियों से खानपान किया जाता रहा है भले ही आज जंग फूड और फास्ट फूड के नाम पर बहुत कुछ ऐसे खाद्य पदार्थ भी परोसे जा रहे हैं जो स्वास्थ्य के लिए अत्यंत डू हानिकारक हैं परंतु इसके साथ-साथ पारंपरिक खाद्य पदार्थों का भी प्रचलन निरंतर जारी है। सर्दियों के मौसम में गर्म चीज खाने को प्राथमिकता दी जाती है और इस परंपरा में ऐसी वस्तु को मुख्य रूप से भोजन में शामिल किया जाता है जो शरीर का पोषण करने के साथ-साथ सर्दी से भी रक्षा करने में सहायक होते हैं। अलसी के लड्डू, पंजीरी और गोंद , चिक्की गुड, मूंगफली तिल की गच्चक आदि सर्दियों के विशेषण खाद्य पदार्थ हैं।

सर्दियों में गोंद खाने से शरीर गर्म रहता है। गोंद से हड्डियां मजबूत होती हैं और हार्ट से संबंधी बीमारियों का खतरा कम होता है। इसलिए भोजन में गोंद जरूर शामिल करना चाहिए। गोंद खाने से शरीर को अनेक पोषक तत्व मिलते हैं। सर्दियों में गोंद के लड्डू, पंजीरी और चिक्की लोग खूब खाते हैं। गोंद खाने में स्वादिष्ट होता है और इससे शरीर को ढेरों फायदे मिलते हैं। बबूल का गोंद खाने में सबसे ज्यादा इस्तेमाल किया जाता है।आयुर्वेद में कई दवाओं में गोंद का इस्तेमाल किया जाता है। दवाओं की बाइंडिंग में भी गोंद मदद करता है। पेड़ के तने से जब रस निकलने लगता है और ये सूख जाता है तो गोंद बन जाता है। सूखने पर ये भूरा रंग का और काफी कड़ा हो जाता है। आप जिस पेड़ का गोंद खाएंगे उसके औषधीय गुण भी गोंद में आते हैं। ठंड में आपको गोंद का सेवन जरूर करना चाहिए।

कीकर या बबूल का गोंद- ज्यादातर लोग बबूल का गोंद ही इस्तेमाल करते हैं। ये बहुत पौष्टिक होता है। खाने में, लड्डू और पंजीरी बनाने में बबूल का गोंद अच्छा होता है।

नीम का गोंद- अगर आप नीम के गोंद का सेवन करते हैं तो इससे खून की गति बढ़ती है और स्फूर्ति आती है. कई औषधियों में नीम के गोंद का इस्तेमाल किया जाता है।

पलाश का गोंद- हड्डियों को मजबूत बनाने के लिए पलाश के गोंद का उपयोग किया जाता है। पलाश के 1 से 3 ग्राम गोंद को मिश्री वाले दूध या आंवले के रस के साथ खाने से बल और वीर्य की वृद्धि होती है।

गोंद खाने के फायदे-

- जो लोग सुबह गोंद और आटे से बने लड्डू खाकर दूध पीते हैं उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है।
- गोंद से बनी चीजें खाने से हार्ट की बीमारियों का खतरा कम होता है और मांसपेशियां मजबूत बनती हैं।
- बच्चे के जन्म के बाद महिलाओं को गोंद के लड्डू खिलाए जाते हैं. इससे दूध ज्यादा बनता है।
- गर्भवती महिलाओं के लिए गोंद फायदेमंद माना जाता है। इससे रीढ़ की हड्डी मजबूत बनती है। गोंद खाने से शरीर में ताकत आती है और सर्दियों में गर्माहट लाने के लिए इसका इस्तेमाल किया जाता है। इस तरह करें गोंद का सेवन-
- आप गोंद को आटे की पंजीरी में मिलाकर खा सकते हैं। इसके लिए भुना आटा, मखाने, सूखे मेवे और चीनी को भुने हुए गोंद के साथ मिक्स करके पंजीरी बना लें।

- नारियल का पाउडर, खसखस के दाने, बादाम और गोंद को घी में भूनकर लड्डू बना सकते हैं। ◆◆◆

अमेरिका में हर पांचवां व्यक्ति कर रहा योग

1.32 लाख करोड़ का हुआ बाजार

अमेरिका में योग का क्रेज बढ़ रहा है। 33 करोड़ की आबादी वाले अमेरिका में हर पांचवां यानी लगभग 6.5 करोड़ लोग करते हैं। 2002 में केवल 4 प्रतिशत अमेरिकी योग का अभ्यास करते थे। सेन्टर फॉर डिजीज कन्ट्रोल एंड प्रिवेंशन (सीडीसी) के सर्वे के अनुसार, 75 प्रतिशत अमेरिकी मानते हैं कि योग उनके स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद हैं। अमेरिका में योग की लोकप्रियता के कारण इसका बाजार 1.32 लाख करोड रूपए का हो गया है। इसमें योग क्लासेस का बाजार 48 हजार करोड़ रूपए और योग मैट का योग ड्रेस का बाजार 38 हजार करोड़ रूपए था। 2015 के मुकाबले यह दोगुना है। 70 प्रतिशत बेहतर हेल्थ, 30 प्रतिशत दर्द से राहत पाने को योग कर रहे-

सीडीसी के सर्वे के अनुसार 90 प्रतिशत अमेरिकी अब योग के बारे में जानते हैं। तीन साल पहले यह संख्या 75 प्रतिशत थी। सर्वे के मुताबिक 70 प्रतिशत सेहत बेहतर करने के लिए योग करते हैं, जबकि 30 प्रतिशत लोग इसे दर्द से राहत पाने के लिए करते हैं। गर्दन और पीठ के दर्द से परेशान लोग विशेष रूप से योग का सहारा ले रहे हैं। योग करने वाले अमेरिकी न सिर्फ इसके फायदों को जानने को लेकर उत्सुक, बल्कि इसके इतिहास और फिलॉसफी को भी समझने का प्रयास कर रहे हैं। इसके लिए कई विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों के विद्वान इसके गहन पहलुओं पर अध्ययन के साथ-साथ प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। उदाहरण के तौर पर, राज बलकरा जैसे योग विद्वान योगिक स्टडीज जैसे ऑनलाइन प्लेटफार्म पर योग के बौद्धिक और आध्यात्मिक प्रशिक्षण दे रहे हैं। ये पाठ्यक्रम नए योग प्रशिक्षकों को योग के गहरे इतिहास और फिलॉसफी से परिचित कराते हैं।

पुरूषों के मुकाबले महिलाओं में क्रेज

अमेरिका में पुरुषों के मुकाबले महिलाओं के बीच योग तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। 23 प्रतिशत महिलाएं नियमित रूप से योग करती हैं, जो कि पुरुषों की तुलना में दोगुनी है। महिलाओं का कहना है कि वे इसे शारीरिक संतुलन बनाए रखने के लिए चुन रही हैं। इसके अलावा, महिलाएं इसे एक सुरक्षित व्यायाम मानती हैं। महिलाओं में योग अब योग ध्यान और मेडिटेशन का हिस्सा भी बन गया है।◆◆◆

संबंधों को मजबूत करती वैश्विक नेताओं की भारत यात्रा

यूरोपीय संघ भारत के सबसे बड़े व्यापारिक साझेदार में से एक है। भारत में 6 हजार से अधिक यूरोपियन कंपनी है जिसमें अकेले जर्मनी की 2 हजार से अधिक तो स्पेन की 200 से अधिक कंपनी भारत में है। भारत-स्पेन के रणनीतिक संबंधों को 65 से अधिक वर्ष हो गए हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कहते हैं कि भारत-जर्मनी स्ट्रेटजिक पार्टनरशिप का 25वां वर्ष है, अब आने वाले 25 वर्ष इस पार्टनरशिप को नई बुलंदी देने वाले हैं।

भारत-जर्मनी ने किए दो दर्जन से अधिक घोषणा व समझौते

- नवाचार और प्रौद्योगिकी पर रोडमैप जारी
- ग्रीन हाइड्रोजन रोडमैप दस्तावेज लाँच
- आपराधिक मामलों में पारस्परिक कानूनी सहायता संधि
- भारत-जर्मनी प्रबंधकीय प्रशिक्षण कार्यक्रम पर जेडीआई
- कौशल विकास और व्यावसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण के क्षेत्र में सहयोग पर समझौता
- भारत-प्रशांत महासागर पहल (आईपीओआई) के तहत जर्मन परियोजनाएं और 20 मिलियन यूरो की वित पोषण प्रतिबद्धता
- भारत और जर्मनी के विदेश कार्यालयों के बीच क्षेत्रीय परामर्श स्थापित करना
- जीएसडीपी डैशबोर्ड का शुभारंभ
- भारत और जर्मनी के बीच प्रथम अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान प्रशिक्षण समूह की स्थापना

साहिबजादों का बलिदान

धन्य है भारत भूमि की गोद को गौरव प्रदान करने वाली वे माताएं जिन्होंने अपने वीर पुत्रों के मस्तक पर कलगी और तिलक सजाकर उन्हें राष्ट्र की रक्षा के लिए रणभूमि में बलिदान देने के लिए विदा किया है।

चार साहिबजादों का बलिदान केवल सिख धर्म के लिए ही नहीं, बल्कि पूरी मानवता के लिए प्रेरणा तथा मुगलों के जुल्मों तथा तलवार की नोक पर मजहब को फैलाने का उदाहरण है। चार साहिबजादों ने अपने धर्म, राष्ट्र,सत्य और सिद्धांतों की रक्षा के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिए। सिख समुदाय हर साल इन महान बलिदानों को याद करते हुए साहिबजादों के शहीदी सप्ताह का आयोजन करता है। यह घटना हमें सत्य और धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है। चार साहिबजादों का बलिदान सिख धर्म के इतिहास में एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक घटना है। यह बलिदान गुरु गोविंद सिंह जी के चार पुत्रों ङ्क साहिबजादा अजीत सिंह, साहिबजादा जुझार सिंह, साहिबजादा जोरावर सिंह, और साहिबजादा फतेह सिंह ने दिया था। इनका बलिदान धर्म, सत्य, और न्याय के लिए अडिग रहने का प्रतीक है।

साहिबजादा अजीत सिंह (18 वर्ष) और साहिबजादा जुझार सिंह (14 वर्ष) ने 1704 में चमकौर की गढ़ी की लड़ाई में अपने पिता गुरु गोविंद सिंह जी के साथ मुगलों और अन्य दुश्मनों के खिलाफ वीरतापूर्वक युद्ध किया।

दोनों ने वीरता से लड़ते हुए धर्म और अपने सिद्धांतों की रक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान दिया। यह बलिदान अद्वितीय साहस और निष्ठा का उदाहरण है।

साहिबजादा जोरावर सिंह (9 वर्ष) और साहिबजादा फतेह सिंह (6 वर्ष) को सरहिंद के नवाब वज़ीर खान ने पकड़ लिया और उन्हें इस्लाम धर्म अपनाने का दबाव डाला। दोनों ने धर्म परिवर्तन से इनकार कर दिया और अपनी आस्था पर अडिग रहे। वज़ीर खान ने उन्हें जिंदा दीवार में चुनवा दिया। यह घटना सिख धर्म के इतिहास की सबसे दुखद घटनाओं में से एक है।◆◆◆

प्रश्नोत्तरी

1. **भारत का केन्द्र बिंदु कहां पर स्थित है?**
   (क) मध्य प्रदेश (ख) उत्तर प्रदेश (ग) राजस्थान
2. **भारत का सर्वाधिक साक्षरता वाला राज्य कौन सा है?**
   (क) केरल (ख) बिहार (ग) हिमाचल प्रदेश
3. **भारत का राष्ट्रीय पुष्प कौन सा है?**
   (क) कमल (ख) गुलाब (ग) ट्यूलिप
4. **भारत के प्रथम अंतरिक्ष यात्री कौन थे?**
   (क) राकेश शर्मा (ख) कल्पना चावला (ग) सुनीता विलियम
5. **शेरशाह के काल में दीवानें रिसालत किस विभाग से संबंधित थी?**
   (क) स्वदेशी मामलों से (ख) विदेशी मामलों से (ग) वित्त मामलों से
6. **श्रीनगर किस नदी के किनारे स्थित है? (क) नर्मदा (ख) गंगा (ग) झेलम**
7. **नीली क्रान्ति का संबंध किससे है? (क) जल से (ख) मत्सय से (ग) फसलों से**
8. **महाभारत का युद्ध कहां हुआ ? (क) कुरूक्षेत्र (ख) पानीपत (ग) सोनीपत**
9. **बुद्धिमान पुरुष वही है जो प्रत्येक कार्य को अपने लिए रूचिकर बना ले, ये शब्द किसने कहे थे? (क) शरद चन्द्र (ख) विवेकानन्द (ग) ओशो**
10. **हिमाचल का राज्य पशु कौन है? (क) हिम तेन्दुआ (ख) नील गाय (ग) हाथी**

उत्तर : 1. (क-मध्य प्रदेश) 2. (क-केरल) 3. (क -कमल) 4. (क-राकेश शर्मा) 5. (ख-विदेशी मामलों से) 6. (ग-झेलम्र) 7. (ख-मत्स्य) 8. (क-कुरूक्षेत्र) 9. (ख-विवेकानन्द) 10 (क -हिम तेन्दुआ)

चुटकुले

चिंटू से एक आदमी ने पूछा, बेटा आपके पापा का क्या नाम है ?

चिंटू : अंकल अभी उनका नाम नहीं रखा, मैं बस प्यार से पापा ही कहता हूं।

◆◆◆

मास्टर जी : सबसे ज्यादा नशा किसमें होता है ? **पप्पू :** किताब में,

मास्टर जी : कैसे ?

पप्पू : क्योंकि किताब खोलते ही नींद आ जाती है।

◆◆◆

मेहमान : और बताओ बेटा आगे क्या प्लान है ?

सन्ता : बस आपके जाते ही बिस्कुट खाउंगा, वैसे भी नमकीन और मेवा तो आपने छोड़ा नहीं है।

◆◆◆

राम : मैंने साबुन से अपना शर्ट धोया और अब मुझे वह छोटा हो गया।

श्याम : तुम भी उसी साबुन से नहा लो, फिर वह तुम्हें फिट हो जाएगा।

बांग्लादेश में हिन्दुओं पर अमानवीय अत्याचार पर

हिमाचल आक्रोशित

कार्यालय

मातृवन्दना (मासिक)

डा. हेडगेवार भवन, द्वितीय तल नाभा,
शिमला-171004, हिमाचल प्रदेश

दूरभाष : 0177-2836990,
मोबाइल : 7650000990

सेवा में

मातृवन्दना प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 367, फेस - 9, उद्योग क्षेत्र मोहाली, एस.ए.एस. नगर से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला-4 से प्रकाशित।

follow us on :